एक वृत्त और

[कहानी संग्रह]

प्रेमचन्द्र गोस्वामी

सतरंग प्रकाशन, जयपुर
द्वारा प्रकाशित

बसीवाल प्रिंटर्स, जयपुर मे
श्री भवरलाल बसीवाल
द्वारा मुद्रित

तीन रुपया मात्र

EK VRITT AUR
Prem Chandra Goswami [Short
Rs
सतरंग प्रकाशन, जयपुर

वन्द हैं हम
ग्रौर ताली है गुम कहीं पर
न जाने कहा, मरता है कोई,
जलता है घर, ग्रपने
ग्रनिश्चय मे,
ग्राग्रो वुनें घोसला
निगाह का

W. B Yeats

सतरंग प्रकाशन, जयपुर
द्वारा प्रकाशित

बशीवाल प्रिंटर्स, जयपुर मे
श्री भवरलाल बशीवाल
द्वारा मुद्रित

तीन रुपया मात्र

EK-VRITT AUR ——
Prem Chandra Goswami [Short Stories]
Rs. 3-00
सतरंग प्रकाशन, जयपुर.

बन्द है हम

और ताली है गुम कही पर

न जाने कहा, मरता है कोई,

जलता है घर, अपने

अनिश्चय मे,

आओ बुनें घासला

निगाह का

W. B Yeats

संकेतिका

[रचना-काल 1959 से '66]

यादें

यादें. एक के बाद एक उभरती हुई यादें. विगत दिनो की अस्पष्ट परछाइयां एक टूटती और जुडती विचार-शृंखला. अतीत के गर्भ मे डूबे हुए समय की धुंधली सी स्मृतियां जाने क्यो आज बार-बार मन को कुरेद रही हैं आखों के सामने जैसे अतीत का चित्र खिंचता जा रहा है कदाचित् इसलिए कि मेरे पास समय है. काफी समय प्रति क्षण जैसे ठहर गया है और उस ठहरे हुए समय मे मैं बीते दिनो की गंध लेता हूं

रुग्णता की अवस्था निश्चय ही ऐसी अवस्था है जो नितान्त स्थिर है. यों जब कि हम समय के पहिये की गति के साथ घूमता हुआ देखते हैं, यह उसकी बिल्कुल विपरीत स्थिति है. अभी अभी मेरा मित्र शीतल मेरे पास बैठा था शीतल, अपने नाम की तरह ही सहज और सौम्य. कितना अन्तर है कल और आज के शीतल मे. रात और दिन का सा. उसका बचपन यदि रात की गहराई लिए हुए था तो जवानी ने सरलता की नई किरण से उसके जीवन को प्रकाशमान बना दिया है. अपना स्कूल का जीवन याद करता हूं तो लगता है कि वह शीतल नहीं, कोई और है. कोई अजनबी.

क्लास मे सबसे उद्दण्ड, क्रोधी और झगडालू बडा होकर इतना शालीन, व्यवहारकुशल और सरल स्वभाव हो जावेगा-इसकी कल्पना भी

लिए. डॉक्टर ने कल ही कहा था-'ठीक आठ बजे दो गोलिया'
लेकिन शायद. यह मेरा ही कुसूर है कि मैं बीमार पडा .

शीतल एक एक क्षण को जीना जानता है. शालिनी को बडी मुश्किल से एकान्त मे मिलने का समय मिल पाता है और जब ऐसा होता है तो वे अधिक से अधिक समय तक एक साथ रहना चाहते हैं.

'दूध वाला'-बाहर स भइया आवाज देता है.

'अन्दर आकर दे जाओ'

'बाबू साहब ! अब कैसी तबीयत है ? वह सहज सहानुभूति के स्वर मे पूछता है

'अच्छा हूँ'

दूध वाला चला जाता है. उसकी सहानुभूति के स्वर मेरे कानों म गूजते रहते हैं. वह सदा ही कम बोलता है. उसके मन की गहराई मे जाने के लिए उसकी आत्मा को पढना पडता है. अभी पिछले दिना पैसो के अभाव मे जब मैंने उससे कहा था, 'बस भइया, कल मे दूध बन्द कर दो' तो उसकी सूरत बिल्कुल उदास हो गई थी. चेहरे पर कुछ दया के भाव उभरे और आखो से सहानुभूति छलकने लगी थी. वस्तुस्थिति उससे छिपी नहीं थी. बोला-'हमको अपना भाई समझो बबुआ हम दूध बन्द नही करत रहत. हमकत पईसा नहीं चाहत. तुमार सेहत का खयाल करो, हा'. और इतना कह कर चला गया था उसके स्वर मे छिपी सहानुभूति के सम्मोहन मे मैं जैसे डूब गया. आगे मैं कुछ भी नहीं कह सका. स्वय मुझे अपनी हालत पर तरस आने लगा. सोचता हूँ तो कितनी ही बातें स्मृति-पटल पर मलने लगती हैं. आज फिर ऐसे दोराहे पर आकर खडा हो गया हूँ जिसकी मजिल दूर तक दिखाई नही देती. दोनो ही अधेरे के मार्ग हैं रम्यता और अर्था-

भाव. कल मैं निश्चय ही मइया को दूध बन्द कर देने के लिए कहना
पड़ेगा. आखिर कब तक मैं उनके एहसानों का भार वहन करना
रहूँगा. उनकी सहानुभूति का कब तक गलत लाभ उठाता रहूँगा. लेकिन
कदाचित् मुझमें उन्हें इन्कार कर देने की शक्ति नहीं है. अगले दिन
की कठोर करके उन्हें कोई बात कह देने का साहस नहीं.
मुझे ठीक तरह से याद है, कुछ दिन पहले तक मैंने रात-दिन जाग कर
कड़ी मेहनत की है किन्तु अब जरा सा काम करने बैठता हूँ तो सर
चकराने लगता है. आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है कानों में
अजीब सी भन्नाहट होने लगती है
आज सवेरे मिश्राजी के दफ्तर का आदमी आया था. मिश्राजी के
दैनिक अखबार के लिए कार्टूनों के बहुत से विषय लेकर. कहना था-
'इस बार पैसे शीघ्र ही मिल जावेंगे ' किन्तु जब पैन्सिल या ब्रूची लेकर
बैठता हूँ तो लगता है जैसे कुछ भी नहीं हो पाएगा. कोई कार्टून नहीं
बना पाऊँगा . .

कुछ देर पहले वर्षा हुई थी. अधिक नहीं. कुछ ही बूंदें गिरी थी. अब
आकाश साफ है, लेकिन उमस. अन्दर और बाहर उमस एकान्त में
आज घुटन सी महसूस कर रहा हूँ. खिड़की के बाहर सड़क से धुआं
उठ रहा है. काला और गहरा धुआं, जिसे मैं ही देख रहा हूँ. केवल
मैं . अन्य कोई नहीं . .
बीमार आदमी के लिए हर चीज सोचने का विषय है. सामने दीवार
पर टंगा कैलेण्डर, शीतल का कमीज, बम्बई में पढ़ रही शीतल की
बहिन का बनाया हुआ काले फ्रेम वाला पेन्टिंग. मेरा बुश्शर्ट और
बुश्शर्ट की जेब से निकलता हुआ नीले टिप वाला पैन. हां, यह पैन
मुझे बीना ने दिया था. मेरे जन्म-दिन के अवसर पर. जन्म-दिन

की कोई पार्टी नही थी, स्वय मुझे याद नही था. बीना ही ने याद दिलाया. बीना उन दिनो मुझमे गहरी दिलचस्पी दिखाती थी और मैं न जाने उस समय दिलचस्पी की सतह पर कैसी कैसी राहें तय कर गया. जाने उसके सम्पर्क मे आकर अपने भावी सबधो के क्या क्या अन्दाज लगा बैठा. बीना ! कितना अजीबोगरीब केरैक्टर. पिछले पाच सालो मे उसके जीवन म एक साथ कई परिवर्तन देखे हैं मैंने. एक मासूम और भोली लडकी का दिल कितना कठोर और अपारदर्शी हो सकता है. एक मा अपनी सन्तान के प्रति कितनी असम्पृक्त हो सकती है एक पत्नी अपने पति के करीब रह कर भी उसस कितनी दूर रह सकती है. यह सब मैंने बीना ही क जीवन से जाना है. सचमुच बीना की तस्वीर उसके चेहरे के असली रूप से कितनी भिन्न है. कितना विरोधाभास है उसके चेहरे की मासूमियत और चरित्र मे. कोई उसके चेहरे को देख कर उसके मन की गहराई मे नही जा सकता शुरू शुरू मे बीना के कई मित्र रहे प्रत्येक मित्र से ऐसे मिलती जैसे उसके अतिरिक्त उसका और किसी से विशेष परिचय नही. और कुछ अर्से बाद उन सभी सबधो को एक कच्चे धागे का रूप देकर एक झटके के साथ तोड देती. जिसका कदाचित् उसे थोडा भी रज कभी नही हुआ एक अधेड डाक्टर स शादी भी कर ली जिसे मुश्किल स दो साल निभाया इस अर्से मे एक गोरा सा मासूम बालक उसकी गोद मे खेलने लगा. फिर एक दिन सुना कि उसने डाक्टर को तलाक दे दिया. कोर्ट ने बच्चे की परवरिश डाक्टर पर छोड दी जिससे बीना बाद में कभी नहीं मिली. दूसरी शादी थल सेना के एक विधुर मेजर से की. इस शादी मे शामिल होने का निमत्रण-पत्र मुझे मिला था. यद्यपि शादी में नही जा सका लेकिन एक बार 'बम्बई सेन्ट्रल' के स्टेशन पर बीना से मुलाकात हो गई तो औपचारिक मुबारकबाद दे दी थी.

कुछ दिनों बाद अखबारों में एक समाचार छपा था-'अपने प्रेमी को पाने के लिए पति की हत्या.' यह बीना थी जो अब जेल के सीखचों में बंद थी नहीं जानता कि कोर्ट उसका फैसला क्या देगी, किन्तु इतना अवश्य जानता हूँ कि उसने इस ग्लानि के बाद मैंने उसके साथ अपने संबंधों का जिक्र आज तक किसी से नहीं किया ...

वातावरण में बढ़ी हुई उमस के दौरान हवा का एक झोंका, जो चाहता है खिड़की के करीब जाकर खड़ा हो जाऊं और ठंडी हवा के झोंकों का आनन्द लूं प्रकृति की इस सौगात को सौ सौ हाथ समेट लूं. लेकिन नहीं खिड़की तक जाने की जरूरत नहीं. अब यहां तक भी हवा के हल्के झोंके का स्पर्श महसूस कर रहा हूँ....

शीतल चाहे दवा लाये न लाये, सोचता हूँ मैं कल तक ठीक हो जाऊंगा. फिर किसी के विषय में नहीं सोचूंगा. अधिक सोचने से हम विषय की गहराई को नहीं छू पाते. विषयान्तरित होकर मस्तिष्क भटकने लगता है. शायद भटकना मेरा स्वभाव बनता जा रहा है. भटकता ही तो रहा हूँ अब तक. पहले किसी तलाश में भटकता रहा अब जैसे हर तलाश खो गई है और तलाश के मध्य टंगी हुई यादें ठहर ठहर कर उभर रही हैं.

शीतल लगभग बारह बजे तक आयेगा. मैं उसे रोज की तरह फिर पूछूंगा पर शायद वह अपने जीवन के इस परिवर्तन के विषय में कभी कुछ नहीं बतायेगा. दूधवाला कहने पर भी दूध बन्द नहीं करेगा. बीना से अपने संबंधों के बारे में शायद मैं कभी किसी को कुछ नहीं कहूँगा. लेकिन यादें यादों का यह क्रम शायद कभी बन्द नहीं होगा .. कभी नहीं

●

i

एक वृत्त और

मदन ने अपने पुराने पेंट की जेब से एक सस्ता सा सिगरेट का पैकिट निकाला और उसमें सिगरेट टटोलने लगा. उसने देखा उसमें मुड़ी हुई एक ही सिगरेट शेष है. उसे सीधा किया, सिलगाई और धुएं का कश खींचने लगा. उसे लगा जैसे उसके पड़ोसी को सिगरेट के धुएं से कुछ कोफ्त हो रही है. दृष्टि फिराई. पास की टेबल पर बैठा एक गंजा आदमी अपने भद्दे दांतों में अंगुली दबा कर उसे चूस रहा था. उसकी टेबल पर दो प्लेटें पड़ी थीं, जिनमें एक प्लेट में कोई चाट जैसी वस्तु थी. उसे देख कर मदन को उबकाई आने लगी. बैरे को चाय के लिए कहा. चाय आ गई. चाय का रंग हमेशा से कुछ अधिक लाल था.

'कड़क है साब.'

मदन ने बैरे की ओर देखा जो अनावश्यक रूप से मुस्कुरा रहा था. उसकी मूंछें असंतुलित अनुपात में तराशी गई थीं. मदन उन्हें देख कर हंस दिया.

'टोस्ट ले आओ.'

बैरा चला गया. मदन ने सिगरेट को समाप्त किया और राखदान में डाल कर वैसे ही दाहिने पैर पर जोर देकर उसे हिला दिया. उसे महसूस हुआ कि उसकी यह क्रिया व्यर्थ थी क्योंकि सिगरेट तो

उसने राखदान मे डाला था. पहले इधर-उधर दृष्टि फिराई और
फिर चाय के प्याले की ओर देखने लगा. प्याले मे अब तक हल्की सी
भाप उठ रही थी. आज पहली बार उसकी गध उसे बहुत भायी.
चाय पीने की बजाय वह उसकी गध लेने लगा. धीरे धीरे चाय की
भाप कम हो गयी. उसने देखा चाय ठडी हो रही है. वह सोच
रहा था–अभी चाय खत्म हो जायगी और वह पैसे देकर रेस्तरा से
बाहर चला जायेगा. सुस्त, अनमना. सदा की तरह फिर सुबह होने
ही रेस्तरा के रेडियो की आवाज के साथ ही उसकी नीद खुलेगी
और वह वहा आ बैठेगा. आधे घटे तक रेडियो सुनेगा, फिर
कड़क चाय.

सुबह के वक्त चाय पीने तक उसे किसी तरह की चिता नही रहती
लेकिन जैसे ही रेस्तरा से बाहर कदम रखता है उसे अपनी स्थिति का
ध्यान हो आता है. आज फिर उसे नौकरी की तलाश मे शहर भर
के दफ्तरो मे चक्कर लगाने है शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक
पैदल चल कर पिछले दिनो जब अनिल दिल्ली गया था तो अपनी
साइकिल उसे सौंप गया था. तब उसे आने-जाने मे कितनी सुविधा
रही थी उसने सोचा था कि नौकरी लगते ही वह एक साइकिल
खरीदेगा बहुत बडा शहर है लम्बी-चौडी सडकें साइकिल के
बिना वह कही समय पर नही पहुच पाता है रिक्शे का खर्च वह
कैसे बर्दाश्त कर सकता है ? इस समय तो उसे खाना भी एक ही
वक्त खाना पड़ता है. उसे भान हुआ जैसे फिर वह अपनी गरीबी
के बारे मे सोचने लगा है. वह रोज ऐसा न सोचने का सकल्प करता
है और हर बार वह टूटता हुआ सा जान पडता है.

'और युद्ध आयेगा शाब '

बैरे ने पूछा तो उसे लगा जैसे वह कह रहा हो-अब उठो यहा से.

'नही, पानी लाओ.'

पानी का गिलास आ गया पर उसने पिया नही. चाय का बिल था बीस पैसे का. मदन ने प्लेट मे पच्चीस पैसे रख दिये तो बैरे को कुछ थोड़ा आश्चर्य हुआ. आज महीनो बाद मदन ने टिप के पांच पैसे दिये थे.

रेस्तरां से बाहर आया तो उसका ध्यान सामने की बिल्डिंग मे अनिल के कमरे की ओर चला गया जहा वह पिछले छः महीनो से टिका हुआ है. कमरा बहुत छोटा है पर उन दोनो के लिए काफी है.. कमरे की खिड़की खुली देखी तो आश्चर्य हुआ क्योंकि अनिल आज सबेरे ही निकल गया था अतः वह स्वयं खिड़की बन्द करके रेस्तरा तक आया था. उसने जल्दी से कदम बढाए और कमरे तक पहुँच गया.

'अरे अनिल ! क्या हुआ ? तुम वापस कैसे आ गए ?'

'ऐसे ही'-सुस्ती भरी आवाज मे अनिल ने कहा और एक ओर बिछी खटिया पर लेट गया.

मदन ने देखा उसके चेहरे पर थकान की रेखाएँ उभरती जा रही है. उसने यह पता लगाने के लिए कि कही उसे बुखार तो नही है, अनिल के हाथ को छुआ. सचमुच उसका बदन तप रहा था.

'मैंने तुम्हें कहा था आज बाहर मत जाओ. तुम्हें कल रात से ही बुखार है.'

अनिल बिना उत्तर दिये लेटा रहा. सिगरेट जलाई और धुएं के गुबार छोड़ने लगा. फिर उसने एक-एक करके कई सिगरेटें जलाईं और तब तक फूकता रहा जब तक कमरा धुए से नही भर गया.

मदन चुपचाप बैठा रहा. कई बार इच्छा हुई कि अनिल से कुछ कहे पर हर बार बात होठों तक आकर रह गई. आज मदन को कई जगहों पर जाना था. कई सरकारी और प्राइवेट दफ्तरों में नौकरी पाने के लिए. आज उसकी जेब बिल्कुल खाली थी. पिछले दो महीनों तक साइकिल वाले की दुकान पर पार्ट टाइम काम करके उसने जो पचास रुपये प्राप्त किए थे उनमें से शेष चवन्नी को भी वह चाय की भेंट चढ़ा आया था.

चाय पीने से पूर्व उसके दिमाग में एक विचार आया था एक भद्दा सा विचार. किसी थर्ड रेट रेस्तरां पर सिंगल कप चाय पीकर पन्द्रह नए पैसे बचा लेने का विचार. उसे यह बात कतई नहीं रुची सामने वाला रेस्तरां बिल्कुल साफ सुथरा है. चाय भी अच्छी मिल जाती है. साथ में शाही ढंग से सिगरेट पीते हुए रेडियो सुनने का मौका भी मिल जाता है

कमरे में धुआं कम हुआ तो मदन ने अपनी डायरी में कुछ लिखना शुरू किया

'क्या लिख रहे हो ? यही न कि साढ़े दस से ग्यारह बजे तक पी. डब्ल्यू. डी., साढ़े ग्यारह से एक बजे तक इंडियन ऑक्सीजन ऑफिस और दो बजे से ढाई बजे तक इन्श्योरेन्स कार्पोरेशन ऑफिस.'

अनिल ने एक नया सिगरेट सिलगा लिया था.

मदन चुप रहा.

'और इन सब जगहों पर जाने के लिए जरूरत होगी तीन रुपये पच्चीस नए पैसे की. सो मेरे पास हैं नहीं.'

'हा यार, ग्राज तो सचमुच बिल्कुल खाली है जेब.' मदन ने गम्भीर स्वर मे कहा.

'ये लो. नौकरी लगते ही पहली तनख्वाह से वापस ले लूगा'-कहते हुए ग्रनिल ने पाच रुपयो का एक नोट मदन की ग्रोर बढा दिया. मदन ने पहले तो झिझक दिखाई पर फिर नोट ग्रपने हाथो मे ले लिया. इसी तरह पिछले छ महीनो मे जाने कितनी बार ग्रनिल ने उसे पाच-पाच के नोट दिए हैं.

नोट ग्रपनी जेब मे रख कर खडा हुग्रा तो मदन की जेब से एक लिफाफा गिर गया. ग्रनिल की निगाह उस पर गई. उसे याद ग्राया कि यह वही लिफाफा है जो उसने ग्राज से तीन दिन पहले मदन को दिया था. उसे ग्रब तक नही खोला गया था.

'तुमने इस लिफाफे को ग्रब तक खोला नही ?'

'एँ ! हा !' कह कर मदन ने उसे वापस ग्रपनी जेब मे रख लिया.

'लाग्रो मैं खोलता हूँ बडे बेमुरव्वत हो, पता नही पिताजी ने क्या लिखा है '

'जानता हूँ यार क्या लिखा है !' मदन ने बडे ग्रसम्प्रक्त भाव से कह दिया ग्रौर नल की तरफ चला गया.

ग्रनिल ने कहा-'लाग्रो मुझे दो खत, मैं पढूगा.'

'लो तुम भी पढो. यही लिखा होगा-मा की तबीयत खराब है. कालूराम मकान बिकवाने की धमकी दे रहा है. मुझे भी दमा की शिकायत बढने लगी है. लल्ली के पास दिवाली मे पहनने के लिए एक भी फ्रॉक नहीं है. मुन्ने को स्कूल में दाखिला नही मिला है.' मदन का स्वर कुछ उत्तेजित हो गया था.

अनिल ने देखा तो वह दंग रह गया. सचमुच खत में यही बातें लिखी थी. मदन एक अर्से से उसके पास रह रहा है पर उसने कभी इन सब बातों का जिक्र नहीं किया था. सदा यही कहता रहता था कि उसके मा-बाप गाव में खेती करके काम चलाते हैं. उन्हें कोई कष्ट नहीं. कोई तकलीफ नहीं. उसे याद है वह कई बार घर से पत्र पाकर बहुत गम्भीर हो जाता था किन्तु तुरन्त ही चेहरे पर मुस्कुराहट भी खेलने लगती थी

आज उसे रह रह कर यही खयाल आने लगा. मदन का हृदय कितना विशाल है. उसमे कितने तूफान छिपे हैं. वह है कि अपने चेहरे पर इन स्थितियों की शिकन भी नहीं पड़ने देता. अनिल कुछ कहे इससे पहले ही वह कमरे से बाहर हो गया था.

मदन की दिनचर्या फिर शुरू हो गई. एक आॅफिस से दूसरे आॅफिस. एक कम्पनी से दूसरी कम्पनी. शाम होते ही थक कर घर लौटना और चारपाई पर लेट जाना. एक वक्त का भोजन. हर चौथे या पाचवे दिन *अनिल की जेब से निकला हुआ एक पाच का नोट. गाव* से पिता का खत. खत मे कुछ न कुछ भेजने का अनुरोध. रात को देर तक जागते रहना. सुबह होते ही रेडियो और रेस्तरा. चाय. फिर दफ्तरों मे ...

सवा दस बज चुके थे. साढ़े दस बजे उसे किसी आॅफिस मे बुलाया था. उसके कदम तेजी से बढने लगे और वह सड़क मे गुजर रही भीड मे खो गया. एक और दिन गुजारने के लिए. एक और वृत्त बनाने के लिए ...

o

फैन्टेसी और यथार्थ

रेखा जब घर आई तब उसने अपने कार्यक्रम की एक लम्बी-चौडी सूची बना डाली. पहले कुछ दिन वह चित्रकला का अभ्यास करेगी. उसकी प्रेक्टिस छूटे एक अर्सा होने को आया. अपने कला-गुरु सतीश जी से मिले तो उसे पूरे पाच महीने गुजर गये. अपनी सहेली की पेन्टिग्ज भी उसने बहुत दिनो से नही देखी. नीता ने काफी तरक्की करली होगी. हरदम 'स्केच बुक' अपने साथ रखती है अब से वह भी नियमित अभ्यास करेगी. आखिर उसकी इच्छा पूरी होने की यही तो एक राह है-उसके चित्र बडी-बडी कला-दीर्घाओ (आर्ट गैलरीज) मे लगेंगे उसके चित्रो की प्रदर्शनिया होगी देश-विदेश मे जब प्रसिद्ध चित्रकारो के साथ उसका नाम लिया जाएगा कला-अकादमी उसे पुरस्कार से सम्मानित करेगी. कला-आलोचक, कैमरा-मैन और सवाददाता उसे घेरे रहेंगे. प्रत्येक कला-प्रेमी उससे मिलने को उत्सुक रहेगा और वह सबके सामने अपनी कला-साधना की चर्चा एक अलग ढग से करेगी. किसी से कहेगी-मुझे कला की प्रेरणा कल-कल करते झरने से मिली, तो किसी से कहेगी-चित्र बनाते समय मेरे अन्तर का कलाकार कार्य करता है. मै अपने आप को भूल जाती हू. कला-साधना कोई साधारण कार्य नही है. लोग उसकी बातो को अक्षरश. स्वीकार करते जाएगे. इस स्वीकारोक्ति से उसे कितना परितोष प्राप्त होगा, कितना आनन्द होगा! उफ! ...वह.... गद्गद् हो उठेगी.

उसके सोचने की धारा बन गई थी और वह उसमे गति के साथ बही जा रही थी. एकाएक उसकी दृष्टि मेज के कोने पर रखे एक लिफाफे पर पडी. लिफाफा उसी के नाम मे आया था. पोस्ट ऑफि-

सम्पादक थे. रेखा के पिता के सहपाठी रहे थे. दोनों में घरेलू सबध थे.

रेखा ने नमस्कार किया और हस कर बैठ गई.

प्रखर जी बोले-'अपनी कहानी देखी तुमने ? कितनी सुन्दर छपी है. रेचित्र भी बनवाये थे उसके साथ. मेरे पास तुम्हारी प्रशसा के कई पत्र आए हैं. लोग तुम्हारा पता जानना चाहते हैं. तुम कहो तो लिख दूं? या तुम्हें पत्र भिजवा दू ?'

रेखा मन ही मन खिल उठी. पहली बार उसकी कहानी छपी और प्रशसा पत्र।

"अच्छा। कौन से अक मे ? मैने तो अक भी नहीं देखा.' रेखा ने पूछा

प्रखर जी ने 'निकष' का नूतन अक उसे अपने बस्ते से निकाल कर दिया.

रेखा की कहानी सचित्र छपी थी पत्रिका की साज-सज्जा भी सुन्दर थी देश भर मे पहुचती थी रेखा ने अपनी कहानी मे प्रेस की खामियां देखने के लिए पत्रिका पर आख जमाई पर वह असल मे कुछ नही पढ पाई उसके विचार उसे दूर एक साहित्य जगत मे ले गये वह सोच रही थी कि उसकी कहानी 'निकष' जैसी प्रसिद्ध पत्रिका मे छप सकती है तो छोटी-मोटी पत्रिकाओ की तो बात ही क्या। प्रखर जी ने कई बार उसकी कहानियां लौटा दी थी मगर अब वास्तव मे उसकी लेखन-शक्ति बढ गई है. वह चाहे तो अच्छी से अच्छी कहानियां लिख सकती है. मेहनत करके क्या शीघ्र ही वह देश के प्रसिद्ध लेखक-लेखिकाओ की पंक्ति म खडी नही हो सकती ? आखिर उसने बी. ए. किया है. कई भाषाओ की पुस्तकें पढी हैं. कितने दिन तक कविता-कहानियो की रचना की है

कुछ और भी लिखो।' प्रखर जी ने यह यह कर उसे उत्साहित करना चाहा-'भई, आजकल मूल कहानियों पर तो हम चालीस रुपया पुरस्कार देते है '

'जी हा, जरूर लिखूगी.' रेखा मुस्कुरा दी

चाय आ गई थी, दोनो ने पी.

प्रखर जी बोले-'अब मैं चलूगा. तुम्हारे पिताजी शायद जल्दी आने वाले नही हैं ?'

रेखा ने नमस्ते किया. प्रखर जी चले गए.

अन्दर पहुच कर उसने आलमारी खोली और अपनी कहानियो की पाडुलिपिया देखने लगी.

रेखा कई बार मनीश जी से मिलने गई पर उनसे भेंट नही हो सकी. कभी वह यात्रा पर थे कभी स्टूडियो से दिन भर बाहर. सरला से मिली तो उसे ऐसा लगा जैसे वह अब कला-सम्बन्धी बातो में दिलचस्पी नही दिखाती नीता कही और चली गई थी.

निशि को उसने दो पत्र लिखे पर उसका जवाब नही आया न तो वह इलाहाबाद जा सकी और न उसे कहानी या कविता लिखने की फुर्सत मिल सकी घर पर मेहमान आ गए थे मेहमान कुल तीन थे पर उनके बच्चे नौ पेन्टिग्ज बॉक्स खोलती तो मक्खियो की तरह मडरा जाते. तम्बूरा छेड़ती तो रसोई से मा की आवाज आ जाती कहानी लिखने बैठती तो पिताजी के दौरे पर जाने का सदेश मिलता उनके लिए तैयारी करनी होती इस तरह दो माह गुजर गये.

एक दिन सबेरे-सबेरे रेखा किसी पाकेट-बुक से एक गजल गुनगुना रही थी कि कमरे की घटी बज उठी. दरवाजे पर किसी ने बटन दबाया था रेखा दरवाजे तक गई तो देखा- कुन्दन सूट-केस लिए

खड़ा है वह हतप्रभ सी रह गई उसे लगा जैसे उसकी कल्पना धुएँ का एक गुबार बनती जा रही है और उसके अधर में उसे कोई घसीट रहा है. वह ठगी सी खिंची जा रही है उसकी आखों के सामने धुध छा गई अपने दोनो हाथों से सिर को दबा कर वह कमरे में लौट आई उसकी चेतना अब भी उस धुएं में घुट रही थी उसे लगा कि तम्बूरे के तार अनायास ही झंकृत हो उठे हैं और कोई *विदा का गीत गुनगुनाने लगा है और कागजों की एक अजीब* फड़फड़ाहट के साथ वह गीत शून्य में विलीन हो गया

उसकी चेतना लौटी तो उसने देखा वह कमरे के बिल्कुल मध्य में खड़ी है, और कुन्दन उसके बाल सहला रहा है. दरवाजे पर एक छोटा बच्चा चिल्लाया-'जीजाजी आ गए' और आगन की ओर दौड़ता हुआ चला गया.

कुन्दन ने रेखा से कहा-'रेखा हम आज ही रात की गाड़ी से वापस चलना है. तुम्हारे बिना घर उजाड़ और सूना-सूना हो रहा है मा की तबीयत अलग खराब है.

शाम तक सफर की तैयारी कर ली गई. रेखा बहुत खुश नहीं थी. ट्रेन मे बैठ गई तो उसकी दृष्टि प्लेटफार्म पर लगे एक खाली बोर्ड पर जा टिकी जिस पर से अभी अभी किसी फिल्म का पोस्टर हटाया गया था. बोर्ड पर उसने देखा उसकी पेंटिंग का कनवस फट गया है. उसके तम्बूरे के तार टूट गए है और उसकी कहानी के पृष्ठो को हवा के तेज झोंके ने दूर बहुत दूर, उड़ा दिया है और रह गई एक गृहस्थी की तस्वीर जिसमे व्यस्तता है, समर्पण है और है जड़ता.

●

अंधेरे में आशा का मृत सूरज

हर दिन सूरज उगता है और डूब जाता है, उसी तरह उसकी कामना और इच्छा भी डूब जाती है. आशा उससे दूर बहुत दूर होती जाती है और उसका साथ देने के लिए बच रहती है खेद की लम्बी रात और भावनाओं का उमडता हुआ तूफान. इस उमडते तूफान मे उसकी जीवन नैया कई कई बार डगमगाती है, मझधार तक जाती है और फिर एक लहर ऐसी आती है कि वह किनारे लग जाती है. वह सोचती है अच्छा हो अगर *कल्पना की बजाय* सचमुच एक तूफान आए और वह उसमे खो जाए धरती फट पडे और वह उसमे समा जाए. जैसे भी हो इस जीवन का अंत हो जाए ताकि रोज रोज की किल्लत और अपमानजनक घुडकियो मे उसे छुट्टी मिले. कचन का दिल काफी मज-बूत रहा है किन्तु वह सोचती है-शायद अब और अधिक सहन कर सकने की क्षमता उसमे शेष नही है. उसका तन-मन छलनी हुआ जा रहा है उसके सर पर आखिर ऐसा दोष क्यो मढा जा रहा है जिसके लिए वह किसी भी रूप मे दोषी नही ठहराई जा सकती.

स्वय विमल के मन म अनास्था और अनिष्ठा का एक जाल सा बुन दिया गया है. इसी जाल मे उलझे हुए वह कचन को समझने की अपेक्षा और अधिक उलझ कर उसे ही दोषी ठहराता है.

कचन सोचती है-समय भी कितना विचित्र होता है. और उससे भी

कितना विचित्र होता है आदमी. परिस्थितियों और भावनाओं के ज्वार में कोतर कितना बदल जाता है वह. जैसे अभी कल ही की बात है. जब वह वधू बन कर इस नए घर में आई थी तो उसके रूप और यौवन की कितनी प्रशंसा की थी सबने. विमल ने भी उसके सौन्दर्य का गुणगान करते हुए कहा था—'सचमुच तुम्हारा रूप तुम्हारे नाम के अनुरूप है. कचन की देह है तुम्हारी कचन ! तुम्हें पाकर मैं सब कुछ पा गया हू.' विमल घटो उसके करीब बैठ कर उसके रूप और यौवन से अपनी प्यास बुझाता. कचन कहती थी—'आपने मुझे अपने प्रेम की छाया में स्थान देकर मुझ पर बहुत बडी कृपा की है पर मेरे देवता ! कहीं ऐसा न हो कि अथाह समुद्र सा सुख देकर आप मुझ से रूठ जायें. सच कहती हूँ एक एक बून्द के लिए तरस जाऊगी.'

विमल उसके गुलाब से होठो पर अपनी अगुली रख कर उसे आश्वस्त करता—'ऐसा न कहो, कचन ! मैं तो लोहा हू. कचन से सदैव पराजित. भला तुम्हारी उपेक्षा क्या कर कर सकूगा !'

स्नेह और आश्वासनों के मनोहारी नगर म विचरते कचन और विमल का जीवन जिस स्वच्छन्द और शान्त वातावरण मे प्रारम्भ हुआ समय के अन्तराल ने दोनो के मध्य एक ऐसी ठोस और मजबूत दीवार खडी कर दी कि उसके पार भावन में भी वे एक दूसरे का चेहरा स्पष्ट रूप से नही देख पाये.

उनके विवाह को पूरे पाच वर्ष गुजर चुके थे किन्तु कचन की कोख में कोई सतान अभी पैदा नही हुई थी. सतान के अभाव ने जितना प्रभावित स्वय कचन को नही किया था उसकी सास और ननद को— उतना ही विचलित कर दिया.

कचन के प्रति उन दोनों के व्यवहार में एक अनोखा परिवर्तन

लगा. कंचन की बातों का सीधे मुह जवाब न देना. बात बात में उसकी उपेक्षा करना. कंचन की छोटी सी गलती को बडा भारी रूप देकर उसको डाट-फटकार देना. कंचन को ऐसा अनुभव होने लगा जैसे घर में उसका दर्जा कम होता जा रहा है. अब न सास पहले की भांति उसकी सुविधा का ध्यान रखती है और न ननद उससे स्नेहपूर्ण व्यवहार करती है.

कंचन ने विमल के सामने स्थिति स्पष्ट करने की चेष्टा भी की थी-'आप देख रहे है. माजी को न जाने आजकल क्या हो गया है. उनका स्वभाव कुछ चिडचिडा तो नही होता जा रहा ?'

विमल ने कंचन की बात ठीक से सुनी भी नही कि उसे ही चुप कर दिया-'दिन भर आफिस के काम मे उलझा रहता हूँ. मुझे क्या खबर तुम्हारे और मा के बीच जाने क्या क्या बातें होती हैं. हो सकता है मा को तुम्हारी कोई बात पसन्द नही हो.'

कंचन ने कुछ उत्तर नही दिया. उसकी आखों मे आसू छलछला आये. पहली बार विमल ने उसकी बात को उपेक्षा से टाल दिया था. उसके मन को बहुत ठेस लगी. उसने सोचा अच्छा होता वह विमल से कुछ न कहती.

जाने क्या सोच कर वह चुप नही रह पाई और कुछ ही क्षणों बाद उसने विमल से कहा-'आप जानते है माजी के नाराज होने की क्या वजह है, यही ना, कि मेरी गोद खाली है. इतने वर्षों के बाद भी मेरी कोख से कोई संतान उत्पन्न नही हो सकी है' उसकी आखों मे आसू अभी रुके नही थे.

'तो क्या यह मेरा दोष है ?' विमल ने उग्र कर कहा.

कंचन को विमल से इस प्रकार के उत्तर की आशा कतई नही थी.

अपनी आशा के विपरीत उससे ऐसा उत्तर पाया तो वह तिलमिला उठी बोली-'न मेरा दोष है न आपका, तो फिर किसका दोष है? आपसे क्या छिपा है. क्या नहीं किया है मैंने माजी के कहने पर. सौ बार अस्पताल हो आई हू.' और फिर अपने हाथ और गले मे पहने हुए तावीज की ओर सकेत करते हुएँ वचन ने कहा-'डोरा-जतर, तावीज सभी कुछ करके देख लिए. हर ऐरे-गैरे के सामने माजी इस तरह की बातों का जिक्र करके मुझे अपमानित करती हैं. और परिणाम जो होता है वह आपके सामने है. हर दिन मुझे अपने गले मे एक नया डोरा बाधना पडता है'

'तो मत बाधा करो डोरे मत जाया करो अस्पताल. पर मेरा सर भी भगवान के लिए मत चाटा करो कचन. मै सच कहता हू मै खुद परेशान हो गया हूँ इस झझट से.' विमल ने झल्ला कर कहा

'आप घर मे बाहर रहते हैं आपके लिए इस झझट से मुक्ति पाना आसान है पर मुझे दिन भर घर मे ही रहना पडता है भला मै अपना दुखडा किसको कहू' कचन ने कहा

'मुझे परेशान मत करो, कचन!'-कहकर विमल ने अपने कपडे पहने और घर से बाहर चल दिया कचन कुछ देर और रो कर रह गई.

असल म न कचन के प्रश्न का उत्तर उसकी सास या विमल के पास था और न सास की साध और विमल की इच्छानुसार कोख भरना कचन के लिए सम्भव हो पाया था कचन न अस्पताल मे अच्छी लेडी डाक्टर से परीक्षा करवा ली थी. सबका यही कहना था कि उसके शरीर मे कोई रोग या कमी नहीं है बच्चा न होना एक सयोग ही है, किन्तु यही सयोग उसके जीवन मे सदा-सदा रिस आने वाला घाव बन चुका था स्वय विमल अपनी डाक्टरी जाच करवा आया था

डाक्टरों की रिपोर्ट के अनुसार विमल में सभी पुरुष सुलभ गुण मौजूद थे. फिर दोनों के सहज संसर्ग के उपरान्त भी संतान का न होना एक संयोग ही था.

कंचन प्रायः सोचा करती, सभी भौतिक सुख उपलब्ध होने के उपरान्त भी उसकी गृहस्थी में वह शान्ति और गति नहीं जो होनी चाहिए. विवाह के बाद स्वयं उसके मन में मां बनने की एक उत्कट इच्छा जागी थी. किन्तु सभी सांसारिक कर्मों के बावजूद उसकी गोद नहीं भर पाई. इसके लिए वह सिवाय अपने भाग्य के किसी को दोषी नहीं ठहराती थी. फिर भी सास और ननद पुत्राभाव का संपूर्ण दोष कंचन पर ही मढ़ती रही थीं. और तो और किसी भी विषय को लेकर उससे झगड़ पड़तीं और यही ताना सुनाने लगतीं.

पिछले दिनों कंचन का छोटा भाई बोर्ड की परीक्षा देने शहर आया. कंचन के सिवा किसके यहां ठहरता. दो से तीसरा दिन हुआ नहीं कि ननद ने कहना शुरू कर दिया-'भाभी ने तो धर्मशाला बना दिया है घर को.'

ननद की बात का उत्तर देकर घर में कलह बढ़ाने की अपेक्षा उसने अपने छोटे भाई को किसी होटल में रहने के लिए भेज दिया. उसके मन में ग्लानि का भाव जम कर बैठ गया. कितना ओछापन है यह ! कंचन ने सोचा उसके दुर्भाग्य ने उसके परिवार में यह ओछापन, यह उपेक्षा और घृणा का भाव भरा है. वह भी कितनी अभागिन है. यदि उसकी गोद भरी होती तो क्या किसी का साहस होता उसे इतना कुछ कहने का. घर के ही नहीं अब तो पड़ोस और मुहल्ले की औरतें आकर भी उसकी चर्चा करने लगी हैं. उन्हें घर के ही लोगों की शह मिली है. आज सुबह गंगा काकी यह जानते हुए कि कंचन रसोई में

बैठी है. बैठक में उसकी सास से जोर जोर से कह रही थी-'विमल की मां, अगर कंचन को सन्तान होनी होती तो कब की हो जाती. कितनी बार अस्पताल हो आए. साधु महात्माओं से तावीज-पत्तर ले लिये अरी अगर होना होता तो क्या अब तक बाट देखना ! अब तुम और वक्त मत गवाओ और विमल की दूसरी शादी की बात पक्की करो तुम कहो तो मैं अपनी बहिन की छोटी लड़की से बातचीत तय करा दूं. लड़की पढ़ी-लिखी भी है और सुन्दर भी देन-लेन का भी कुछ टंटा नहीं. बस तुम्हारे घर की शोभा बन जाये तुम्हारे अंधेरे घर में रोशनी आ जाए'

कंचन का जी किया कि हाथ का बेलन गया काकी के सर पर दे मारे एक को राज और दूसरे को बनवास. ऐसी ही औरतें दुनिया को बरबाद करती आई है वह सोच रही थी कितनी बेशर्म है यह औरत. मेरी ही सौत लाने की बात मेरे ही सर पर कर रही है उसके मन में क्रोध उमड़ने लगा पर वह खून का घूंट पीकर रह गई

सुबह तो वह अपना क्रोध पचा गई किन्तु रात्रि को जब उसकी सास ने विमल से इसी विषय में बात चलाई तो कंचन आग बबूला होकर उमड़ पड़ी. अपनी सास पर झल्ला कर बोली-'मेरे जीते जी आपने मेरा पति सुहाग छीनने की बात करी तो मैं कुछ कर बैठूंगी. न खुद चैन लूंगी न आपको चैन लेने दूंगी'

मानित और प्रताडित किया जा रहा है ? मेरा जीना हराम हो गया है. मुझे घर की बहू, घर की बेटी नहीं समझा जा रहा है. मेरा पति तक छीनने की चेष्टा हो रही है. भगवन ! क्यो मुझे यातना दे रहे हो ? यह कैसी परीक्षा है ईश्वर ? क्यो मुझे नारी होने की अधिकारिणी नही रहने देते ?'

उस रात कंचन को नींद नही आई. कोई उसे सात्वना देने भी नही आया. विमल भी उससे अलग कमरे में सो रहा.

दूसरे दिन सुबह तक उसके जी मे घबराहट बनी रही. उसका बदन तपने लगा और शरीर मे बार बार पसीना आने लगा था. शाम तक हालत और खराब हो गई. शाम को विमल अस्पताल से दवाई ले आया. दूसरे, तीसरे और चौथे दिन भी तबीयत ठीक नही हुई तो कंचन को अस्पताल मे भर्ती करवा दिया गया.

अस्पताल मे दस-पन्द्रह दिन रहने के बाद कंचन की हालत मे कुछ सुधार हुआ. जिस दिन अस्पताल मे छुट्टी मिली उस दिन डाक्टर ने विमल को एक ओर बुलाकर कहा-'आपकी पत्नी के पाव भारी है. देखिये इनका ज्यादा ध्यान रखिये और किसी तरह का शारीरिक या मानसिक कष्ट न दीजिये.'

विमल ने अपनी मा को यह बात राह मे ही कह दी.

डॉक्टर के एक छोटे से वाक्य ने जादू का सा असर किया. कल की उपेक्षित और प्रताडित कंचन को घर के वातावरण मे बिल्कुल ही तब्दीली दिखाई दी. अब उसके साथ पुन. वैसा ही व्यवहार किया जाने लगा जैसा शुरू मे किया जाता था अब न उसे कोई ताना दिया जाता न उसकी छीछालेदर होती. उसकी सुख-सुविधा का ध्यान अनायास ही रक्खा जाने लगा. उसके सुख के दिन जैसे लौट आए.

किन्तु बचन का इस स्थिति में सन्तोष नहीं था. यह सारा बननी-ठनी इस घर में उसकी कोई गरज नहीं. आखिर वह इस घर में बहू बन-कर आई है. किन्तु वह के रूप में उसके अधिकार का इतनी जल्दी हरण क्यों लग गया है ? कहते हैं नारी अनादि काल से पूज्य मानी गई है. वह घर की लक्ष्मी होती है किन्तु क्या उसे यह सम्मान केवल मां बनने पर ही मिल सकता है ? एक नारी केवल नारी के रूप में इसकी अधिकारिणी नहीं ?

उसकी विचार शृंखला न जाने ऐसे कितने ही विचारों से बनती और टूटती और वह उनमें खोयी रहती पर किसी से विवाद नहीं करती थी.

बचन की गोद में शिशु पल रहा था. अतः वह स्वयं भी शान्त बनी रहती थी और न कोई दूसरा उसे कुछ कहता था.

दिन चढ़ आने के उपरान्त बचन ने एक मृत शिशु को जन्म दिया. विमल सहित परिवार के सभी लोगों के मन को जैसे कोई बहुत बड़ा झटका लगा. सभी को अत्यन्त दुःख हुआ किन्तु शायद भविष्य में वंश चलने संतान-प्राप्ति की आशा में सबने उसे सहन किया. बचन तब भी तटस्थ बनी रही.

एक मृत शिशु को जन्म देकर चाहे बचन अपने मन में पल रही कुंठा को समाप्त नहीं कर पाई हो किन्तु इतना अवश्य था कि प्रसव के बाद परिवार में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ चली थी. अब न कोई सगा चाची विमल की दूसरी शादी की बात करने आती थी और न सास-ननद के तानों से उसका मन छलनी होता था.

परछाइयां

पेन्टिग शो का अंतिम दिन.

दर्शकों का ताता बन्द हो गया है. कोई इक्का दुक्का दर्शक या कि इस शहर के लिए अजनबी. यह जोडा, निर्देशित मार्ग पर एक ओर मुंह किए हुए किन्तु जैसे गैलरी मे लगी हुई किसी पेन्टिंग से कोई लगाव नही. चेहरे पर एक से भाव

'नीता'–एक व्यंग्यपूर्ण मुस्कुराहट-'यह पेन्टिंग तो हमारे पुराने मकान की तरह लगती है.'

'हा' और वैसी ही खिलखिलाहट जैसी एक क्षण पूर्व युवक के मुंह से फूटी थी फिर कुछ क्षण चुप्पी

'वही क्यो रुक गए ? जल्दी करो, हमे साढे नौ बजे 'मयूर' मे पहुँचना है देखो पहला शो छूट गया '

सिनेमा शो शुरु होने से पूर्व का समय कट गया.

गैलरी मे वही सन्नाटा

कुर्सी घसीटने का स्वर. शायद रामदास सुस्ताने लगा है. एक आर खडा श्रीकात अपनी जेब से 'सिगरेट केस' निकालता है. धुए के गुबार. उसकी दृष्टि गैलरी म लगी अपनी पेन्टिग्ज पर जाती है वह अपनी एक पुरानी पेन्टिंग के करीब आकर खडा हो गया है.

एक फूटती हुई हंसी. हंसी के साथ गैलरी में तीन युवतियां प्रवेश करती हैं. श्रीकांत को देखकर तीनों चुप. उनमें से एक, दो को इशारे से कुछ समझाती है. तीनों युवतियां मुस्किराती रहती हैं.

'आप ?' श्रीकांत से पूछा जाता है.

'जी हां, कोई कठिनाई ?'

'हां. इसी पेन्टिंग पर बैकग्राउंड में जो पैचेज लगाए गए हैं और यह पीला सा धब्बा ?'

'वह पेन्टिंग का 'की पाइंट' है. जहां तहां प्रयोग किए गए पीले रंग का संतुलन बनाए रखने के लिए.'

'देखिये, थर्टी टू नम्बर की पेन्टिंग पर यह रेखा ?' फिर प्रश्न किया जाता है.

'यह हमारी कल्पना का चित्र है. कल्पना की गति जितनी विचित्र है, उतना ही इस रेखा का क्रम. यह एब्स्ट्रैक्ट पेन्टिंग है.'

फिर एक शान्ति.

'ये तो शायद सिर्फ आज के लिए और है ?'

'जी हां.'-श्रीकांत कहता है.

'तो फिर हमारी अन्य सहेलियां कैसे देख सकेंगी ?'

'मेरे स्टूडियो में कभी भी आइये !' -श्रीकांत एक ओर कुर्सी पर पड़े अपने बैग से 'एड्रेस कार्ड' देता है.

'थैंक्यू! नमस्कार !'-एक हल्की सी मुस्कुराहट, स्नो की भीनी सी गंध वातावरण में फैलती है. युवतियां चली जाती हैं. श्रीकांत के व्यस्त जीवन में शायद कुछ लोग और जुड़ गए.

रात का अंधेरा बढ़ता जा रहा है. सड़क पर गैलरी के बाहर लगी

'ट्यूब लाइट्स' का प्रकाश प्रखर होता जाता है. _ सामने का रेस्तरां शायद बन्द होने का है बैरों की सम्मिलित हंसी का स्वर गैलरी तक पहुँचता है

'साहब, गैलरी बन्द होने का समय हो गया '

'तुम जाओ, मैं कुछ देर यहां ठहरूंगा ' श्रीकांत सिगरेट से धुएं का गुबार बनाता हुआ ताली के लिए हाथ बढाता है

रामदीन ताली देकर चला जाता है

श्रीकांत पुरानी पेन्टिंग पर दृष्टि गड़ा देता है मटियाले रंगों के पैचेज से बनी इस पेन्टिंग के साथ उसकी बहुत सी स्मृतियां जुड़ी हुई हैं महत्वपूर्ण यादें घटनाएं

शील ! कितना सौम्य, कितना संतोषप्रद नाम.

शील ! उसकी पत्नी का नाम उसके रूप और गुण के बिल्कुल अनुरूप है पेन्टिंग की हर गहराई मे उसके त्याग की छाप है उसकी साधना उसके सहयोग की छाप श्रीकांत ने इस पेन्टिंग पर लगातार तीन दिन तक अविरल रूप से काम किया था और तब शील ने बिना किसी संकोच के अपने माता के इकलौते बुन्दे भी रंगों और कूचियों की भेंट चढा दिये थे श्रीकांत के पास कमाने का कोई साधन नहीं था शील उसके 'मूड' को समझती थी वह जानती थी कि 'मूड' में श्रीकांत जिस कलाकृति का निर्माण करेगा वह अद्वितीय होगी उसकी परख हर कसौटी पर खरी उतरी वही पेन्टिंग जैसे उसके लिए वरदान थी पहली बार राष्ट्रीय अकादमी के शो में लगी उसी ने श्रीकांत को देश के ख्यातिनाम चित्रकारों में ला खड़ा किया. फिर एक के बाद एक पुरस्कार श्रीकांत की साधना को बराबर बल मिलता गया प्रसिद्धि के साथ ही उसे बहुत से नए परिचित मिले

जर्सी

शाम को जब विजय दफ्तर से लौटा तो उसे कल्पना ही नहीं थी कि विभा अभी तक सुबह के झगड़े की बात को लिए बैठी होगी। अपनी साइकिल एक ओर रखकर जूते उतारे और कुछ देर बाहर के ही कमरे में सुस्ताकर अन्दर रसोईघर में जा पहुँचा। विभा वहीं बैठी थी। उसने विजय को देखा, पर मुस्कुराई नहीं। उसके आफिस से समय पर घर पहुँच जाने पर कोई प्रसन्नता प्रकट नहीं की। विजय

ने सोचा शायद कुछ चुटकी लेने से विभा का मूड बदले. वह बोला-'आज तो भई बड़े दिना बाद खत आया है तुम्हारे घर वालो का मगर उन्होंने तुम्हारे बारे म ज्यादा कुछ नही लिखा बस मेरी ही तरक्की, विदेश यात्रा के काम आदि के बारे मे पूछा है.'

विभा चुप उसने सिर्फ एक बार विजय की ओर देखा और पास रखी ऊन की डोरी को समेटने लगी. विजय को लगा जैसे उसका प्रयास खाली गया. उसके मन के कोने मे खेद की हल्की सी रेखा उभरने लगी. उसने सोचा निश्चय ही विभा सुबह की बात का ही तूल दे रही है वरना उसकी बाट देखने दरवाजे तक न आती उसे घर मे आया देख प्रसन्न न होती पर नही. पिछले कितने ही दिनो से घर के वातावरण मे एक अजीब सा तनाव पलता जा रहा है उसने सोचा, विभा उसकी किसी बात को समझने की कोशिश नही करती ऐसी छोटी छोटी बातो पर नाराज हो जाती है जिन्हे वह अधिक महत्व नहीं देता और फिर आज सुबह भी तो ऐसा ही हुआ था. न बात, न बात का नाम. खाना खाते समय उसने यू ही कह दिया था-'विभा ! दिन भर ऊन और सलाइयो मे उलझे रहना ठीक नही कम से कम खाना पकाते समय तो इनसे छुट्टी पा लिया करो देख रही हो सब्जी का सत्यानाश हो गया. खाने का भी जी नहीं करता '

बात जहा से शुरू हुई थी वहीं रह सकती थी. किन्तु विभा से रहा नही गया. बोली-'जी हा, खाने को जी कैसे करेगा. यह होटल या रेस्तरा थोडे ही है कि जब चाहा थोस चटपटी सब्जिया परोस दी बाहर की चीजें खाते खाते आपकी जीभ का जायका ही बदल गया है आपको तो बाहर की ही चीजें अच्छी लगती हैं. यह घर है

यहा गृहस्थी की गुजाइश के अनुसार सब्जी बनेगी.' और विभा ने अपने हाथो से नई ऊन की वे लच्छियां एक ओर फेंक दी जिन्हें वह विजय की जर्सी बनाने के लिए कल शाम खरीद कर लाई थी

'मेरा मतलब यह नहीं था विभा तुम तो हमेशा मेरी बात को गलत समझ लेती हो.'–विजय ने कहा

'मैं आपका मतलब अच्छी तरह समझती हू मैं अधी या मूर्ख नहीं हूँ कि इतना भी नहीं समझती कई दिनो से देख रही हू कि आपको मेरी कोई बात, कोई चीज पसन्द नहीं आती. न आप खाना ठीक ढग से खाते है और न घर के किसी काम मे दिलचस्पी लेते हैं बक्त-बेवक्त घर मे आते है. छुट्टी के दिन भी सुबह निकलते हैं और रात गए लौटते हैं आखिर मैं इस घर की बान्दी नहीं हूँ '–विभा एक ओर खडी होकर रोने के मूड मे हो आई

'कैसी बातें करती हो शर्म आनी चाहिये तुम्हें यही बक्त मिला है तुम्हें यह सब बाते करने का इस गन्दी सन्दी सब्जी को भी अब नहीं निगल सकता विभा तुम दिनो दिन मूर्ख होती जा रही हो '–विजय यह कहते हुए कुछ गम्भीर हो गया था

'हा, मैं तो मूर्ख ही हूं समझदार तो वे है जिन्होंने आप पर न जाने क्या जादू डाल दिया है कि आजकल घर मे आपका तनिक भी मन नहीं लगता '–विभा ने फिर कहा

'क्या बकती हो ? किसने जादू डाल दिया है ? घर मे मैं कब नहीं आता ? पिछले कई दिनो से देख रहा हू, तुम्हें सिर्फ अपनी बातो की पडी रहती है मेरी हर बात पर भन्नाती हो तुम कल गरम पानी चूल्हे पर चढा रहा तुमने बाल्टी मे डाल देने की तकलीफ नहीं की. कल शाम मेरे दोस्त घर आये तुम डेढ घटे तक बाजार से नहीं

लौटी. व बिना चाय पिये चले गए. वहा तो तुम मुझ पर झल्लायी.' विजय का पारा अब गरम हो गया था.

विभा चाहती तो बात यही खत्म हो जाती किन्तु उससे रहा नही गया. आखो म आसू भरकर बोली-'मैं ही दोषी हू. आपको अपने मे तो कुछ भी दोष नजर नहीं आता. भगवान की सौगन्ध खाकर कहिये पिछले कुछ दिनो मे आप कितने बदल गए है . .उस रात को भी जाने आपके मुह से कैसी गध आ रही थी.'

'विभा, तुम्हारी यह इच्छा है कि मैं चैन से रोटी नही खाऊ तो ठीक है. मैं ये चला.'-कहते हुए विजय ने हाथों मे लिया हुआ कौर छोड दिया था और जल्दी से कपडे और जूते पहन कर दफ्तर की ओर हवा हो गया था.

विभा सिसक सिसक कर रोती रही वह सोचने लगी कितनी मज दूर हो गई है वह यहा आकर. अपने घर से दूर, भाई-बहिनो से परे कि अपने मन से बात का बोझ भी हल्का नही कर पाती. किसे दिखाये वह अपने मन के तूफान को. किसे सुनाये वह अपनी भावनाओ के उफान की कहानी. कोई भी तो नही जो उसे सात्वना दे सके. न कोई घर का, न बाहर का. आज पहली बार उसे लगा कि सास के न होने की बात को जो लडकिया सोचती है वे कितने भ्रम म होती है. विभा ने सोचा, उसकी मा उससे दूर है सास की सेवा भाग्य म नही लिखी. काश ' आज वो होती तो वह उनकी गोद मे सर रख कर कहती-मा, इन्हे समझाओ. मैं सभी कुछ तो करती हू इनके लिए. वक्त पर हर काम. अब तुम्ही बताओ अगर कल बाजार चली गई तो किस लिए ? इन्ही की जर्सी के लिए नई ऊन लानी थी. इन्हे ऊन दिखाने की सोच रही

थी तो यू रूठ कर चले गए है जैसे मैं उनकी व्याहता पत्नी नही कोई रखैल हू

विजय के भोजन पर से उठ कर चले जाने से उसे बहुत दु ख हुआ. उसके मन मे भावनाओ का ज्वार और भी बढ गया आज विजय के साथ बिताए गए तीन वर्षों के दिनो और घडियो को वह एक-एक कर गिनने लगी थी वह सोच रही थी जब तीन वर्ष पूर्व उसकी शादी हुई थी तो विजय कितना करीब आ उसके उतम बाइ शिता यत नही थी विजय को अगर थी तो सिर्फ यह कि वह दिन रात विजय के पास नहीं रह सकती उसके उठने से पूर्व ही बिस्तर से उठ जाती, सोने के देर बाद बिस्तर पर आती और घर के काम की वजह से विजय के साथ पिक्चर जाने या घूमने को निकलने के लिए मना कर देती

और अब, स्वय विजय उससे दूर भागने लगा है जब वह मो जाती है तो घर पर आता है कभी महीनो म पिक्चर जाने या घूमने की बात नहीं करता और करता भी है तो उस उसके आग्रह म वह जोश, वह बात नही लगती शायद ऐसा स्वय वह सोचती हो या कि कुछ और पर इतना वह अवश्य समझने लगी है कि उसम विजय की दिलचस्पी अब कम होती जा रही है तभी तो किसी न किसी बात पर रोज सुबह शाम झगडा, झल्लाहट, नाराजगी यह भी कोई जिन्दगी है आज भी नाराज होकर चल गए अगर ठीक ढग से कहते तो पाच मिनट म कोई दूसरी सब्जी बना देती, कुछ तल देती या चटनी बना देती लेकिन ठीक है अगर वो ऐसा समझते है कि मैं उनके लिए एक आसन हू तो रोज रोज उन्हे और खुद को परे-शान करने से क्या फायदा मैं आज ही मायके चली जाऊगी फिर

कभी नहीं आऊंगी बुलाने पर भी नहीं. यही निश्चय करके शाम को वह रसोई घर मे हल्के कोयले जला कर बैठी थी.

विजय दफ्तर से लौटा था तो सुबह की बात को भुला कर, पर विभा ने निश्चय कर लिया था कि या तो वह आज विजय से हमेशा एकसा बना रहने का आश्वासन लेगी या फिर उसे छोड कर चली जायेगी. आखिर वह उनकी पत्नी है-अगर विजय उसे दो कडुवी बातें कहता है तो उसे सुनने की भी हिम्मत रखनी चाहिए. रोज रोज के झगडे से कोई लाभ नही. विजय के लिए छोटी सी बात के पीछे कोट डाल-कर घर से निकल जाना आसान है पर वह ऐसा नही कर सकती. उसे सिर्फ रोना पडता है. सिर्फ रोना.

'सुनिये, मैंने मायके जाने का फैसला कर लिया है.'-विभा ने गम्भीरतापूर्वक कहा.

'क्यो ? ऐसी क्या तकलीफ खडी हो गई है ?'-विजय ने पूछा.

'तकलीफ नही, मै अब आपको और कष्ट नही देना चाहती. मै चली जाऊंगी तो आप जहा चाहे जायें, जहा चाहे खायें, रहे और कभी भी घर मे लौटें. कोई आपको टोकने वाला नही होगा. मैं घर मे रहती हू तो '

'देखो विभा, यह ठीक नही, तुम्हे शायद यह खयाल है कि मैं तुम्हारे बिना एक पल नही रह सकता. यह तुम्हारी भूल है.'-विजय ने विभा को सुबह की ही तरह गम्भीर देखा तो उसे रोकने के स्थान पर यह और कह दिया.

विभा ने एक क्षण सोचा था जब विजय उसे जाने की स्थिति मे देखेगा तो अवश्य रोकेगा. पर अपनी आशा के विपरीत उसने यह

सुना तो वह तिलमिला उठी. बोली 'हां, आपको मेरी गरज क्यों होने लगी. गरज तो मुझे है जो बान्दी बन कर रह रही हूं इस घर में. लेकिन अब मुझे नही रहना है यहां अब कभी नही आऊंगी.'- और वह रोने लगी.

'विभा, तुम्हारी यही जिद कभी तुम्हें मुश्किल मे डाल देगी. मैं नही चाहता कि तुम जाओ. पर यदि जाना ही चाहती हो तो सिर्फ इतना कहे देता हूं-तुम्हे खुद ही लौटना पडेगा मैं लेने नही आऊंगा.'- विजय ने कहा.

'मैं खुद ऐसे मनहूस घर मे अब नही रहना चाहती, जहां मेरे साथ नौकरों का सा बर्ताव किया जाता हो'-विभा ने रोते हुए क्रोध मे कहा.

'अच्छा यदि तुम ऐसा समझती हो तो जहां चाहे जाओ. मैं तुम्हारे टुकडों पर नही पलता हूं. जो मन म आयेगा करूंगा. जा चाहूंगा खाऊंगा जहां चाहूंगा रहूंगा जब जी आयेगा घर आऊंगा, जब चाहूंगा नही आऊंगा'-विजय के होठ गुस्से से कांपने लगे.

विभा रसोई घर से 'ड्राइंग रूम' म गई और अपना सूटकेस उठा लाई. तमतमाती हुई बोली-'तो सम्भालिये अपना घर. मेरे लिए यह किसी कैद से कम नही है मैं आठ बजे की गाडी से जा रही हूं. कान खोल कर सुन लीजिये, फिर कभी इस घर मे नही लौटूंगी '

विजय कुछ नही बोला उसके कुछ समझ मे नही आ रहा था कि वह क्या करे. आज से ठीक एक वर्ष पहले भी विभा ने मैके जाने की जिद की थी तब तो उसके लौटने की भी उम्मीद थी फिर भी उसने विभा का हाथ पकड कर उसका सूटकेस छीन लिया था. किन्तु आज विभा सदा के लिए जा रही है तब भी वह इतना साहस नहीं

बटोर पा रहा है कि उसे रोक कर सख्ती के साथ कुछ कह भी सके. एक क्षण विभा ने अश्रुभरे नेत्रों से विजय की ओर देखा. फिर मुड़कर दरवाजे की ओर चली गई. विजय हतप्रभ वहीं खड़ा रहा. उससे कुछ भी कहते नहीं बन पा रहा था. उसका मन रोने को हो आया. सोचने लगा, कैसी जिद्दी है यह. मेरी परवाह किए बिना चली जा रही है. आखिर ऐसी कौनसी बात हो गई कि यह घर ही छोड़ कर चली जाये. ठीक है अगर इसे इतना ही गर्व आ गया है तो जो जी में आये करे. मैं भी आखिर इन्सान हूं, इसकी मिन्नत नहीं कर सकता.

उसने देखा कि विभा दरवाजे तक जाकर रुक गई है. वह मुड़ी और विजय के करीब आकर बोली–'जा रही हूं. अपने स्वेटर के नीचे की पट्टी के फन्दे गिनवा दीजिए ताकि जर्सी ढीली न बन जाये.'

विजय चुप रहा. विभा गरदन झुका कर विजय के स्वेटर की नीचे की पट्टी के फन्दे गिनने लगी.

विजय का मन एकाएक पसीज गया. कितनी भोली है विभा. उसे सदा के लिए छोड़ कर जा रही है और उसकी जर्सी के फन्दे गिनना चाहती है. हे भगवान! तूने मेरा मन इतना कठोर क्यों बना दिया है कि इस बेचारी की कोमल भावनाओं को ठुकराने का पाप करने के लिए उद्यत हो गया हूं.

विभा स्वेटर की पट्टी के फन्दे गिनती हुई विजय के बहुत करीब आ गई थी. विजय ने अपनी दोनों बाहों को उसके गिर्द फैला कर उसे अपने अंक में भर लिया और उसकी पकड़ धीरे धीरे सख्त होती गई ..

भार

उसे लगा जैसे वह बहुत दूर चल कर आया है थोडी दर चलने के बाद ही थकान महसूस होन लगी तो उसने किसी रेस्तरा मे बैठ कर कॉफी पी लेने का इरादा किया इधर-उधर निगाह दौडाई मालूम हुआ कि 'क्वालिटी रेस्तरा' को, जहा कॉफी भी अच्छी मिलती है और बैठने पर थोडा प्लजर भी महसूस होता है, वह पीछे छोड आया है उसकी इच्छा हुई कि मुड जाय अपनी जेब म हाथ डाला तो देखा कुल नब्बे पैसे हैं इतने पैसो म सिफ वह कॉफी पी सकता है. बैरा

उसे सिगरेट के लिए पूछेगा तो भी इन्कार करना पड़ेगा. इस समय लगभग साढे चार बज रहे हैं धूप हल्की पड गई है. उसके बहुत से मित्र वहा पहुँचेंगे वह पहले से बैठा होगा तो स्वाभाविक रूप से उन्हे कॉफी ऑफर करनी पडेगी जिसके लिए वह इस समय असमर्थ है. इस नीयत से कि यहा कोई परिचित नही मिलेगा और वह सिगरेट पीता हुआ कुछ देर अपने भावी कार्यक्रम के विषय मे सोच सकेगा, उसने सामने वाले साधारण से रेस्तरा मे काफी पीने का निश्चय किया

इससे पहले कि वह रेस्तरा मे घुसता उसे एक परिचित सज्जन आते दिखे. ये किसी दैनिक पत्र के साहित्य सम्पादक थे और उससे जब भी मिलते थे कोई कहानी लिखने का आग्रह करते थे जिससे उसे कोफ़्त होती थी. उसे लिखने-लिखाने मे कभी कोई रुचि नही रही. उसने आख बचा कर निकल जाना ही बेहतर समझा. जल्दी जल्दी कदम उठा कर रेस्तरा मे घुस गया. दृष्टि घुमाई. कोई सुरुचि-पूर्ण चेहरा नजर नहीं आया. सामने दो फौजी किस्म के मूछो वाले आदमी बैठे थे जिन्हे देख कर उसके मन मे अच्छे भाव नही जन्मे. दायी ओर खडे वालो वाला एक गोरा सा लडका, जो पोशाक से अग्रेजी फिल्मो के 'हीरो' सा लगता था, नाक मे रूमाल डाल कर बार बार छीकने की कोशिश कर रहा था. उसने सोचा वह यहा अधिक देर नही बैठ सकेगा. वह सीढिया चढ कर 'फेमिली केबिन' के बाहर बिछी टेबल पर बैठ गया.

'हलो सत्येन !'–तभी उसे एक परिचित आवाज सुनाई दी. उसने देखा 'केबिन' के पर्दे से झाकता हुआ विपिन उसे अपने पास बैठने का आग्रह कर रहा है. वह अन्दर चला गया.

केबिन में विपिन के साथ रेखा भी थी जो उसे वहां पाकर इस तरह गड़बड़ा गई जैसे चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ी गई हो. सत्येन चौंका. रेखा के लिबास और मेकअप को देखने पर उसे लगा जैसे यह वह रेखा नहीं जिसे कुछ अरसा पहले उसने अत्यधिक सौम्य और विनयावृत्त देखा था.

बैरा कॉफी ले आया.

'कैसे हैं आप ? उस दिन के बाद तो आप ईद के चांद हो गए.' रेखा कुछ सम्भल गई थी फिर भी उसका स्वर अधिक संयत नहीं था

सत्येन को 'ईद के चांद' का पुराना मुहावरा अपने बारे में प्रयुक्त किये जाने पर कोफ्त हुई उसने कहा-'अच्छा हूं' और कॉफी की चुस्की लेने लगा उसे कॉफी का स्वाद ऐसा लगा जैसे सब किस्म के जहर उसमें घोल दिए गए हों

'बहुत दिन बाद हम लोग एक साथ मिले हैं'-कह कर वह जैसे कुछ सोचने लगा अतीत के धुंधले पर्दे पर उसने बहुत से चित्र उभरते और मिटते देखे अभी कल ही की तो बात है पहली बार रेखा से मिलने पर उसे लगा था कि भोलेपन और सादगी का उम्र से कोई ताल्लुक नहीं. रेखा सोलहवां पार कर चुकी थी पर जैसे अपने अस्तित्व का उसे लेश भर भी भान नहीं था. वह बिल्कुल भोली और मासूम थी. उसके चेहरे पर विनय के सम्पूर्ण भाव तैरते थे.

उसे ठीक याद है उस दिन आसमान से हल्की हल्की बूंदें गिर रही थी. वातावरण में एक अजीब नमी फैल गई थी. सत्येन ने पैदल ही कालेज जाने का इरादा किया. हल्की बूंदों में भीगते हुए जाना उसे काफी रुचिकर लगा सड़क पर अधिक लोग नहीं थे. वह कालेज के दरवाजे तक पहुँचा ही था कि किसी ने उसे पुकारा-'सुनिये.'

वह चौंका नही. मुड कर देखा यह रेखा थी जो एक हल्की सी मुस्कुराहट से यह स्वीकृति दे रही थी कि उसे उसी ने पुकारा है.

'कहिये.'-सत्येन ने कहा. बूंदे कुछ तेज हो गई थी. वे दोनो एक ओर 'बस स्टेंड' की 'शेड' के नीचे आ गए.

'देखिये, मै एक गरीब लडकी हू.'-रेखा ने कहा-'इस वर्ष द्वितीय वर्ष की परीक्षा मे बैठ रही हू. क्या आप मेरी थोडी सहायता कर सकते है ? मुझे फीस के लिए कुछ रुपये चाहिये, मैं शीघ्र ही आपको लौटा दूंगी.'

सत्येन को,कुछ आश्चर्य सा हुआ. रेखा से वह पहले कभी नही मिला था. सिर्फ राह मे अवसर सामना हो जाया करता था. वह कालेज आता और रेखा कहा जाती थी वह नही जानता था. उसके मस्तिष्क मे दो बातें उठी. एक तो रेखा ने इस सहायता के लिए उसे ही क्यो चुना और यदि चुन ही लिया तो वह इतने रुपये कहा से लाए ? उसके पास तो कुछ नए पैसे भी नही और शीघ्र ही वह इतने रुपयो का प्रबंध भी नही कर सकता उसने सहज सहानुभूति के स्वर मे कहा-'देखिये, इस समय तो मैं इस स्थिति मे नही हू कि आपकी मदद कर सकू. लेकिन हा, शायद दो चार दिन मे प्रबंध कर सकू. शायद आपको चालीस रुपयो की जरूरत होगी ?'

'जी हा. लेकिन दो चार नहीं, सिर्फ दो दिन मे. मैं दो दिन बाद इसी समय यही आपसे मिलूगी. आपकी बडी कृपा होगी.'

बूदें थम गई. आसमान लगभग साफ हो गया था. सत्येन और रेखा के मध्य उस दिन इतनी ही बात हुई. उसने रेखा को स्पष्ट रूप से स्वीकृति नही दी थी, पर फिर भी उसी शाम उसने अपने कई मित्रो के यहा चक्कर लगाए. लेकिन कही से वह रुपयो का प्रबंध

लकीर चुस्त कमीज मे उभरता हुआ उसका अग प्रत्यग उसे सब कुछ बनावटी लगा रेखा ने सत्येन को अपनी ओर देखते पाया तो कुछ घबरा सी गई. विपिन की ओर उन्मुख होकर बोली-'हा, तो हम लोग क्या डिस्कस कर रहे थे ?'

विपिन ने अपना दाया हाथ रेखा के कधे की ओर बढा दिया और उसकी आखो मे आखें डाल कर कहा-'सडे का प्रोग्राम'-और फिर सत्येन को अपनी बातो मे शरीक करते हुए बोला-'भई कल सडे है, तुम चाहो तो हमारी 'ट्रिप' मे शरीक हो सकते हो. पहल गेम्स और फिर चाय, फल और फिल्मी गीत क्यो कैसा रहेगा ?'

'नही तुम हो आओ, मुझे कुछ काम है '-सत्येन ने कहा

रेखा सत्येन की बात पर ध्यान न देते हुए विपिन से बोली-'लकिन तुमने अब तक अविनाश, सुन्दर और विकास को भी इनफार्म किया है या नही ? उनके बिना तो सब मजा ही किरकिरा हो जायेगा '

'जल्दी क्या है, अभी रिग कर देंगे '

'ओ यस !'

'सत्येन, मेरा खयाल है तुम कॉफी का पूरा मजा नही ले सके एक दौर और हो जाये '

'ना, थैक्यू ! अब मै चलू गा ठीक साढे पाच बजे एक पार्ट-टाइम जॉब के सिलसिले में मेरा अपोइटमेंट है '-कहता हुआ वह उठ खडा हुआ रेस्तरा से बाहर आकर उसे लगा जैसे उसके पाव पर्याप्त भारी हो गए है, और अपने कधो पर वह रेखा और विपिन का भार ढोना बढ रहा है

खोयी हुई आवाज

वह अधेड़, जो बाहर लॉन मे बिछी कुर्सी पर बैठा लेडी डॉक्टर की प्रतीक्षा कर रहा था, उठ कर मेरे करीब आ गया कोई आधा घन्टा पहले मैने आकर डॉक्टर को घर चलने का आग्रह किया था और अब तक वह तैयार होकर नही आई थी मुझे अपने पडोसी के कथन पर थोडा सा विश्वास होने लगा उसने घर से चलते समय कहा था-'डॉक्टर चन्द्रकाता का तो नाम ही नाम है. दुगनी फीस और हजार नखरे' किन्तु एक दूसरे अन्तरग मित्र की कही हुई बात का रग मुझ पर गहरा था अत सीधा इसी डॉक्टर के बगले पहुच गया. उसने कहा था कि इस डॉक्टर के हाथ मे जादू का सा कमाल है. मरीज को देखते ही ठीक कर देती है.

'आप डॉक्टर को घर ले जायेंगे ?'-अधेड आदमी ने मुझसे पूछा.

'जी.'-मैने अधेड की बात पर कोई दिलचस्पी नही दिखाई.

'आपकी पत्नी बीमार हैं ?'-उसके स्वर म सहज सहानुभूति थी.

'जी हा '

'क्या हुआ है उन्हें ?'

'रात भर ब्लीडिंग होना रहा. अब बन्द है सोचता हू डॉक्टर को दिखा दू '-मैने ऐसा भाव जताते हुए कहा कि वह अब और कोई प्रश्न नही पूछे

'मेरी एक अर्ज है आपसे.'-वह फिर बोला.

इस बार मैने अधेड की ओर देखा. भरा-पूरा चेहरा. बडी बडी आखें. उसके चेहरे पर याचना के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे. लगा जैसे उसके चेहरे मे निखर रही [illegible] पर [illegible] ने अभी अभी कालिख पोत कर रख दी हो

'कहिये क्या बात है?'-मैंने पूछा.

'देखिए आप डॉक्टर के यहा पहले आए है. अत इन्हें घर ले जाने का आपका पहला हक है पर अगर आप मेहरबानी करें तो मैं इन्हें पहले अपने घर ले जाऊ मेरी बच्ची इस समय भी भारी पीडा से कराह रही है. उसके पास कोई नही. वह बेसब्री मे मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी वह मेरी इकलौती बेटी है.'-कहते हुए उसकी आखो मे बरबस ही आसू छलक आए

मै स्वभावत. किसी की आखो मे आसू नही देख सकता और यहा तो इस आदमी ने एक ऐसी स्थिति का जिक्र कर दिया था जिसे जान कर कोई भी आदमी पसीज जाता. मेरी पत्नी की स्थिति इस समय ठीक थी और मैं डॉक्टर को देरी से ले जा सकता था. कुछ क्षण मैंने उत्तर नही दिया तो वह अधेड पुन. याचना के स्वर मे बोला-'मैं आपका एहसानमन्द रहूगा '

'नही नही. इसमे एहसान की क्या बात है. पहले डॉक्टर आपकी बेटी को देख लेंगी मेरे यहा फिर चल सकती हैं '

'बहुत बहुत शुक्रिया'. उसने जैसे हर्षित होकर कहा किन्तु उसके चेहरे पर बनी हुई श्मशान जैसी मनहूसियत मे कोई फर्क नही आया. उसने बढ कर मुझसे हाथ मिलाया. मैंने महसूस किया कि उसकी गरम हथेली काप रही है उसके शरीर म जैसे किसी अज्ञात भय का कम्पन दौडने लगा है.

डॉक्टर मिसेज चन्द्रकाता अब तैयार थी. मुझे बैग थमाया और बोलीं-'आपका मकान कहा है ?'

'पुलिस लाइन्स म लेकिन सुनिए ! पहले आप इन महाशय के यहा .' कहते हुए मैंने अधेड को इगित किया.

'आपके यहा ?'

'जो हा, डॉक्टर ! मेरी बच्ची बीमार है दर्द से कराह रही है. पहले वहा चलेंगी, तो ठीक होगा सिविल लाइन्स खत्म होने होते पहले चोराह पर मेरा क्वार्टर है '

'आइये '

हम तीनों कार मे बैठ गए कार डॉक्टर चन्द्रकाता ड्राइव कर रही थी हम दोनो पीछे की सीट पर थे. मैं डॉक्टर के जूडे पर लगे फूल की भीनी-भीनी गध को महसूस करने की चेष्टा कर रहा था कि अधेड ने कहा 'कल दिन मे तो ठीक थी साहब बस शाम का एकाएक पेट मे दर्द हुआ और कराहने लगी.'–अधेड एक आह भर कर रह गया

'इसी कोने पर वह लाल मकान '–कार रुक गई.

जब तक डॉक्टर ने मरीज को देखा, मैं 'ड्राइग-रूम' मे बैठा किसी पुरानी सी अग्रेजी की पत्रिका के पृष्ठ उलटता रहा घर म अजीब सी खामोशी का साम्राज्य था रुक रुक कर किसी के कराहने की आवाज आ जाती. पास वाले कमरे मे अधेड की बीमार बेटी थी पत्रिका के निरर्थक विज्ञापन पृष्ठो से बोर होकर मैंने अनावश्यक रूप से कमरे में लगे हुए फोटो देखना शुरू कर दिया मुझे पहचानने में देर नहीं लगी कि ये सभी फोटो अधेड की इसी लडकी के हैं जिसे बीमार पाकर वह तडप उठा है बचपन से लेकर जवानी तक के भिन्न भिन्न फोटो अलग अलग इमेज, और रूपा में सचमुच बडे प्यारे फोटो थे अधेड की नन्ही बहुत सुन्दर थी इतनी सुन्दर कि चित्र देखने वाले को भी उसके सौन्दर्य के प्रति सहज सहानुभूति हो जाय काले और घने बाल हिरनी की सी आखें लम्बी

श्रौर नुकीली नाक, मोहक स्वरूप गठीला शरीर, सचमुच यदि अग्रेड के स्थान पर श्रौर कोई होता तो उसे भी उसके बीमार होने का इतना ही दु:ख होता, मैं यही कुछ सोच रहा था कि डॉक्टर के साथ अग्रेड 'ड्राइंग-रूम में आ गया.

'कैसी है तबीयत आपकी लड़की की ?' मैंने पूछा पर अग्रेड ने उत्तर नहीं दिया. वह डॉक्टर की तरफ आँखें फाड़ फाड़ कर देखता रहा.

'इंजेक्शन दे दिया है. यह दवा पिलाने की है. बाजार से ले आइये.'– कहते हुए एक चिट लिख कर डॉक्टर ने अग्रेड को दे दी. उसने यंत्रवत हामी भर दी. मैं डॉक्टर के साथ अपने घर चला आया.

उस दिन शाम को कार्यालय से लौट रहा था. रास्ते में ही अग्रेड का घर पड़ता था. सोचा उससे लड़की के हाल-चाल पूछ आऊँ पर पहुँचा तो 'ड्राइंग-रूम'में ही अग्रेड से भेंट हो गई. वह उदास सा सर पर हाथ रखे बैठा था निराशा श्रौर खेद की रेखाएं उसके चेहरे पर अपने गहरे निशान बना चुकी थीं . मुझे देख कर बड़ी शालीनता से उठता हुआ बोला–'आइये ! आइये ! क्षमा कीजिए, सुबह में आपकी ठीक तरह से'अटेन्ड'नहीं कर सका. कहीं आप इल फील तो नहीं कर गए. सच पूछिये तो मैं इस समय भी आपका स्वागत वैसा नहीं कर पाऊंगा जैसा मेरी बच्ची के स्वस्थ होने पर कर पाता.'–उसने मुझे सोफे पर बैठने का आग्रह किया.

'कोई बात नहीं. अब कैसी तबीयत है आपकी बेबी की?'

'सो रही है.'–उसने अत्यन्त हल्की सी आवाज में कहा–'विश्वास कीजिए साहब ! वह बड़ी कुशल मेहमान नवाज है. मेहमानों को कभी उससे कोई शिकायत नहीं रहती. उसकी सहेलियां उसके गुणों

से ईर्ष्या करती है. बोलचाल, व्यवहार और रूप में उस जैसी कोई लड़की नहीं. मैं उसे बहुत चाहता हूं. अपने प्राणों से भी अधिक.'

वह भाव विभोर बह जा रहा था-'साहब, आदमी को मोह क्यों हो जाता है ? कैसे हो जाता है ? मेरी बच्ची के पैदा होने से पूर्व मैं किसी को नहीं चाहता था अपनी बीवी को भी नहीं पर जैसे ही यह पैदा हुई दिन व दिन मेरा प्यार दिन मोम होता गया. मेरे दिल में स्नेह की धड़कनें बढ़ने लगीं यह बच्ची मेरे जीवन में खुशी बन कर आई है.'

'बचपन से ही पढ़ने-लिखने में होशियार हर दर्जे में सबसे अव्वल रहती है. खेलकूद और व्यायाम में इस सदा तगमे मिले हैं. सूरत इतनी कि हर पोशाक में परियों की महारानी लगती है आप ये फोटो देख रहे हैं न सब इसके हैं. साहब, इसने मेरे घर को स्वर्ग बना दिया है.'

'पिछले साल मेरी पत्नी चल बसी पर इसने कभी मुझे उसकी अनुपस्थिति खलने नहीं दी घर का कामकाज, सेवा-सुश्रूषा में कभी लापरवाही नहीं दिन रात मेरा खयाल रखती है. यह जो मनहूसियत आज आप मेरे घर में देख रहे हैं साहब, यह मेरे दुर्भाग्य की द्योतक है. मुझे तो लगता है जैसे मेरी बच्ची को लोगों की नजर लग गई. सच कहता हूं साहब, इसकी बोली में अमृत का मिठास, संगीत का जादू है. व्यवहार में गहरी शालीनता है यह सचमुच बहुत प्यारी बच्ची है.'

और फिर वह उठ कर मुझे वे सभी चित्र, जो 'ड्राइंग-रूम' में लगे थे, एक एक कर दिखाने लगा 'यह इसका बचपन का चित्र देखिए, कितने बाल हैं इसके सर पर. इधर देखिए, चार बरस की उम्र में

ही इसने पढना-लिखना शुरू कर दिया था. यह चित्र इसके स्कूल म हुए एक 'फैशन शो' का है जिसमे यह 'भारत नाट्यम' की एक मुद्रा मे है. मेरी बच्ची नृत्य कला मे भी निपुण है ये तीनो चित्र तैराकी, हॉकी और खोखो म प्रथम पुरस्कार लेते हुए है. देखा आपने, प्राइज देने वाले सभी मिनिस्टर्स है'

'यह देखिए, इसे सलवार-कमीज कितना फबता है. यह चित्र साडी म है. इस भिन्न भिन्न पोशाको म फोटो खिचवाना बहुत पसन्द है. यहा राजस्थानी ड्रेस मे है. देखिए, यहा अपनी सहेलियो के बीच है. पर सच बताइये साहब, क्या फोटो देखने वाले की नजर किसी और पर टिक सकती है ?'-कहते हुए गर्व से उसका मस्तक ऊचा हो गया. पर यह गर्वीली मुद्रा दूसरे ही क्षण बदल गई. उसकी गर्दन निढाल झुक गई.

अपनी आखो मे आसू भर कर वह बोला-'देखिए मेरे इस जिगर के टुकडे की हालत थोडे से दिनो म कैसी हो गई है. उन खून के दस्त लग रहे है.' और मेरा हाथ पकड कर मुझे अन्दर के कमरे मे ले गया जहा उसकी बीमार बेटी एक पलग पर सो रही थी. एक खामोश और निश्छल नींद.

मैंने देखा उसकी सौम्य मुखाकृति गहना गई है गालो गालो पर उभर आई हड्डियो के गढ्ढो मे धस कर निस्तेज हो गई है. उसका चेहरा मुरझा कर पीला पड चुका है. गठीला शरीर किसी पीडा के भार से दब कर हड्डियो का ढाचा मात्र रह गया है. देख कर मन रोने को हो आया. अधेड उसके करीब बैठ कर आसू बिखेरने लगा. एक तो खाट मे पडी उसकी बीमार लडकी का यातनाभुक्त शरीर दूसरे अधेड के वेदनामय आसू. मेरा दम घुटने लगा. मैं बाहर आ गया

इसके बाद दूसरे दिन सुना कि प्रधेड की लाडली बेटी ने दम तोड़ दिया. उस पर जैसे कोई भारी चट्टान बेतहाशा आ गिरी.

प्रधेड से मिलने के बाद मैंने स्पष्ट रूप से महसूस किया था कि उसके मन का सम्पूर्ण स्नेह उसकी बेटी पर केन्द्रित हो गया था. उसकी लडकी ने उसके निराशामय जीवन को आशा की नई किरण से प्रकाशमान बना दिया था, जिसने कभी किसी से प्यार नहीं किया उसे प्यार करना सिखाया. उसके जीवन व चेतनापूर्ण सहज एवं सौम्य क्रियाओं की विधायक वह लडकी थी जिसके गिर्द उसका स्नेह सिमट कर रह गया था.

कई बार यह कल्पना मन को झकझोर जाती कि उस लडकी के बाद उस आदमी का क्या होगा ? लडकी चल बसी तो क्या उसके हाथ जो बच्ची की बीमारी के प्रहार से सुन्न पड गए है जिन्दगी का भारी बोझा ढोने के काबिल रह पायेंगे ? क्या वह अपनी उम्र जी पाएगा ? फिर शायद यह सोच कर सतोष कर लेता कि समय की गति के साथ गहरे से गहरा घाव भी भर जाता है. जरूरी से जरूरी चीज का अभाव भी पूर्ण हो जाता है. समय के अन्तराल की धुध मे वे सब पीडाए खो जाती है जो कभी हमे रह रह कर सालती है, कचोटती हैं. पर कदाचित् मेरा यह आशावादी दृष्टिकोण यथार्थ की कसौटी पर खरा नही उतरा. एक दिन सुना कि प्रधेड का अचानक हृदयगति बन्द हो जाने से देहान्त हो गया. वह अपने स्नेहपात्र से मिलने स्वर्ग सिधार गया.

लगा जैसे प्रधेड मरा नही अपनी लाडली बेटी को पुकारते पुकारते उसकी आवाज खो गई. दिशा खो गई उम्र खो गई

●

संस्कारों की बेड़ियां

उसकी आज सुबह से ही मन स्थिति कुछ अजीब सी हो रही है. उदासी, खेद और चिन्ताओं का भार उसके मस्तिष्क पर जैसे प्रतिक्षण तीव्रता से जमता जा रहा है. रोम रोम में एक बासीपन व्यापता जा रहा है. सुबह पहली डाक से उसे अपने पिताश्री का पत्र प्राप्त हुआ था. पत्र क्या था उदासी का परवाना था वह. उसे पढ़ने के बाद उसकी स्थिति ऐसी हो गई जैसे सांप सूंघ गया हो उसे.

दे' तक एक ही मुद्रा मे कुर्सी पर बैठा रहा अपने भावी जीवन की जान किन किन सभावनाओ के विषय म सोचता रहा पत्र म लिखा था 'बेटा याग्नेश इस खत का तार समझ कर फौरन रवाना हो जाओ इसी माह की सत्रह तारीख को शादी का मुहूर्त निकला है अपने दयारामजी को तो तुम जानते ही हो, उन्ही की लडकी से तुम्हारा रिश्ता तय किया है पढी लिखी और सुशील लडकी है, सुन्दर भी है आशा है अपने पिता के इस फैसले को तुम एक आज्ञा कारी पुत्र की भाति स्वीकार करोगे '

उसने सोचा अब तक वह सब कुछ अपने पिता की इच्छा के अनुसार ही करता आ रहा है स्कूल जीवन म भी उसने अपने पिता की मर्जी स ही मैथमेटिक्स पढा अन्यथा उसकी रुचि था चित्रकला और ज्याग्राफी म जैसे तैसे यह विषय निभ गया स्कूल के बाद वह आर्ट स कालेज म पढना चाहता था अपने पिता की इच्छानुसार उसे इ जीनियरिंग कालेज ज्वाइन करना पडा कई बार वह स्वय को इतना बडा हुआ इतना परवश अनुभव करता जैसे कोई कैदी हो उस पर अपने स हो गए संस्कार लाद गए थे उस एक वातावरण म पाला गया था कि वह घर म स्वय स बडो के सामने कभी सर नहा उठा पाया था कई कई बार तो उसे अपनी भावनाओ का खून ही कर देना पडता था उसे लगता जसे वह निरा विवश और निर्देशित जिन्दगी जी रहा है

इस नए शहर म वह इजिनियरिंग पढने जरूर अपने पिता की मर्जी स आया था किन्तु यहा आकर उसे काफी राहत महसूस हुई थी उसके सर पर दिन रात जो निर्देशो का साया मडराता रहता था उस स उसे निजात पर उसने काफी हल्की सास ली थी वहा सगतऊ आगा उसे अपने माता पिता और भाइयो से जो आदेश मिलते

रहते उनके पास मे वह अपने अस्तित्व को बिल्कुल ही भूल सा जाता था. जैसे स्वय को नकारता रहा हो अब तक. किन्तु यहां आने के बाद मे इन बन्धनों, इन आदेशों से उसे एक लम्बी छुट्टी मिल गई. वह स्वय को स्वतंत्र अनुभव करने लगा. और ऐसी स्वतंत्र वातावरण मे उसकी भेंट स्मिता से हुई थी. स्मिता से मिलने के बाद उसके जीवन मे कुछ रंगीनी आने लगी. उसके मन मे जो कुंठाओं के ताले लगे हुए थे, एक एक करके खुलते जा रहे थे.

स्मिता, भूरी आंखों वाली उसकी 'क्लास-फैलो'. वही एकमात्र लडकी क्लास मे थी. इंजिनियरिंग की नपी-तुली तकनीकी पढाई और वह लडकी. सभी लडकों को बडा विरोधाभास होता इन दोनों के मध्य. क्लास मे लडकों ने कई कहानियां गढ ली थी स्मिता के विषय मे. कोई कहता था स्मिता ने प्रेम विवाह करने की कसम खाई है. किसी से सुनने को मिलता कि स्मिता के पिता को किसी ऐसे वर की तलाश है जो सुन्दर-सुशील तो हो ही साथ ही दहेज आदि की भी कुछ माग न करे. कुछ इंजिनियरिंग क्लास मे स्मिता जैसी सुन्दर, सुघड, आकर्षक लडकी का आना अप्रत्याशित दुर्घटना बताते. किन्तु इन सब बातों मे से कोई एक बात भी सच नही थी. यह सहज सयोग था कि स्मिता ने लेक्चरार बनने की इच्छा मे इंजिनियरिंग का कोर्स करने का विचार किया. और यह भी एक सयोग था कि यहा उसकी भेंट योगेश से हुई.

योगेश और स्मिता की भेंट निरतर आत्मीय सम्बन्ध बनते रहने का कारण बनी. और आज दोनों के मध्य की दूरियां लगभग टूट चुकी हैं. दोनों एक दूसरे को चाहने लगे हैं. इस चाहत के दौरान योगेश

न अपने मन मे एक साहसिक इरादा बाधा है स्मिता को अपनाने का. वह अपने और स्मिता के मध्य सम्बन्धो की रही-सही दूरी भी पाट लेना चाहता है.

पिछले दिना योगेश पर्याप्त भावुक हो चला है वह रात-दिन कुछ ऐस सपने देखा करता है जिनका सीधा सम्बन्ध स्मिता स विवाह करने म है.

स्नेह नगर की इस मजिल तक पहुचते-पहुचते योगेश यह बात प्राय भूल गया कि वह एक ऐस पिता का बेटा है, ऐसे भाई का अनुज है, ऐसी मा का लाल है जो कभी स्वप्न मे भी इस विषय म उसके अपने निर्णय मे सहमत नही हो सकते फिर भी इन सबकी दूरी का लाभ उठा कर उसने निर्णय कर लिया कि जैसे ही उसकी पढाई समाप्त होगी वही स्मिता के सामन विवाह प्रस्ताव रक्खेगा हालाकि उसका यह प्रस्ताव सर्वथा औपचारिक सा होगा क्योकि जाने अनजाने उन दोनो के मध्य ऐसा मौन समझौता हो चुका है कि वे एक दूसरे के लिए ही हैं

अभी कल ही उसकी फाइनल परीक्षा समाप्त हुई है और आज उसे अपने पिताश्री का खत मिल गया उसे अपनी कल्पनाओ और भावनाओ का महल ढहता हुआ नजर आया एकबारगी ही उसकी आखो म पिता-भ्राता और माता के निर्देश म जी हुई जिन्दगी चित्रवत् घूम गई भला इन सब के सामन वह कैसे कह पायेगा कि उसने अपने विवाह के विषय मे स्वय निर्णय ल लिया है वह जानता है, उसका निर्णय अपने पिता के निर्णय म, जिसमे उन्होने दयारामजी की लडकी मे उनके विवाह की बात लिखी है, किसी मायने मे कमजोर नही है स्मिता रूपवती, गुणवती और सुन्दर लडकी है.

खानदान भी अच्छा है. किन्तु इन सब बातो को अपने पिता के सामने कह सकने का साहस शायद उसमे नही है. जो आज तक अपने से बडो के सामने कभी सर नही उठा सका, भला यह सब कहने का साहस कहा से बटोर पायेगा ? नही, वह ऐसा करके भी अपने रूढिवादी पिता को राजी नही कर सकता. अपनी परम्परा-पोपक मा और भाई को नही मना सकता.

फिर वह क्या करेगा, उसका मन अनेक अज्ञात आशकाओ से भरता जा रहा था. यदि उसने उनके निर्णय से इन्कार कर दिया तो उसे अपने सभी सगे-सम्बन्धियो और आत्मीय लोगो के स्नेह-सरक्षण स सदा सदा के लिए वचित हो जाना पडेगा.

नही, वह कुछ नही कह पायेगा. उसका मस्तिष्क भारी होने लगा. वह उठ कर नल की ओर गया. और देर तक अपना सर पानी से भिगोता रहा.

कमरे मे लेट कर उसने अपना पेन और कागज उठाया. सोचा, शायद पिताजी को इस विषय मे अपना निर्णय लिख देने से काम चल जायेगा. पर वह कुछ नही लिख सका वह जानता था-पत्र पढते ही उसके पिता आग बबूला होकर यहा पहुंच जावेंगे और उसे अपनी बेंत दिखा कर हर बात के लिए राजी कर लेंगे. किन्तु अब वह कोई बच्चा नही है कि हर बात उसे आख दिखा कर या डरा धमका कर मनवा ली जावे इस बार वह किसी से नही डरेगा. उसने जरा साहस बटोर कर सोचा वह पिताजी को साफ-साफ लिख देगा कि वह दयारामजी की लडकी से शादी करने को कतई तैयार नही है. शादी करेगा तो सिर्फ स्मिता से. वह स्मिता को चाहता है. स्मिता भी उससे प्रेम करती है. दोनो ने एक दूसरे को करीब से देखा और

लहरों का पुल

कुन्दन ने इस बार मुझे जिस लडकी का पत्र दिखाया उससे सहज ही मे अनुमान लगाया जा सकता था कि वह लडकी कुन्दन के प्रति काफी ग्रासक्त है इससे पूर्व भी वह मुझे कई लडकियो के पत्र दिखा चुका है मैन देखा, पत्र मे एक जगह लिखा था-'कुन्दन, मैं तुमसे प्रेम करती हूँ तुम्हारे बिना जिन्दा नही रह सकती तुम मुझे छोड कर तो नही चले जाओगे ? सच मानो, तुम एक दिन के लिए भी कही चल जाते हो तो मुझे लगता है जैसे मेरे प्राण सूखे जा रहे हो, मेरी सम्पूर्ण क्रियाये शिथिल पड गई हो, मेरा शरीर सूना और खाली हो जाता है जैसे मुझमे अपना कुछ शेष नही कुछ भी नही . .

आगे वही मिलने मिलाने की बातें थी जो आधुनिक प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे को लिखा करते हैं

'सुना, इस बार ऐसी-वैसी लडकी नही है. 'फोर्थ ईयर' मे पढ़ती है. देखने मे खूबसूरत !' यह कहते हुए उसके चेहरे मे गौरव के अजीब से भाव उभर आए थे.

मैंने इस बात को बिल्कुल साधारण ढग से ली. उसके आगे जरा भी आश्चर्य प्रकट नहीं किया जैसा कि वह चाहता था. पत्र लिफाफे म डाल कर उसे थमा दिया.

'आओ चाय पियेंगे.' ऐसा आग्रह वह बहुत कम करता है और जब करता है तो कम से कम मैं नही टालता. मैंने फॉर्मेलिटी नहीं बरती. कैन्टीन चलने को तैयार हो गया.

कुन्दन मेरा मित्र है. ऑफिस मे जिन लोगो के साथ मित्रता के गहरे सम्बन्ध हैं उनमे से एक. शक्ल सूरत से बुरा नही. अच्छा डील-डौल. बडी बडी आखें. कुल मिला कर ठीक-ठाक व्यक्तित्व, किन्तु ऐसा भी नही कि नित नई लडकिया उसे प्रेम करने लगें. प्रेम पत्र लिखने को मिल जायें.

कैन्टीन मे बैठ कर चाय नही कॉफी पी. ऑफिस के दायरे मे रह कर भी आफिस के विषय मे लगातार बातें करना मुझे कुछ बेतुका सा लगता है किन्तु जब कुन्दन ने अपनी प्रेमिकाओ के विषय मे लम्बी-चौडी बातें छेडी तब भी मुझे कोफ्त ही हुई.

वह कह रहा था-'शोभा का कलकत्ता से पत्र आया है' और कुछ क्षण रुक कर मेरे चेहरे की आर देखा. कदाचित् उसे मेरी सूरत मे प्रश्नसूचक चिन्ह नजर आया.

'अरे वही जिससे दिल्ली मे भेंट हुई थी।'

मुझे याद नहीं कि दिल्ली मे किसी शोभा नाम की लडकी से हमारी भेंट हुई हो. हा, इतना जरूर याद है कि वहा कुन्दन और मैं कई दिनों तक साथ रहे थे और उन दिनो मे मेरे साथ रह कर भी वह न जाने किन किन लोगो के बीच व्यस्त रहा. कॉफी की एक चुस्की ली और बात के क्रम को जारी रखते हुए मैंने पूछा-'हा, फिर?'

'यार, शोभा भी काफी स्मार्ट है.'

'हां.'

'सोचता हूँ एक बार कलकत्ता हो आऊं'-कुन्दन ने रूमाल से अपना मुंह पोंछते हुए कहा और आत्मीय भाव से मेरी ओर टेबल पर झुक गया.

'बिल्कुल'-मैंने कहा.

'लेकिन यार, यों मैं किस-किस लड़की के लिए बाहर जाता रहूंगा ?' उसने अनासक्त भाव से कहा

मैं उसके कलकत्ता जाने न जाने के विषय में कुछ नहीं बोला. किन्तु उसकी बातों में दिलचस्पी दिखाने के लिहाज से पूछ लिया-'यह लड़की तुम्हें कैसी लगी ?'

'कौन विमला ?' कुन्दन ने पूछा.

मुझे मालूम हुआ कि इस नई लड़की का नाम विमला है.

'हां, यह फोर्थ ईयर वाली सुपरक्लास.' यह कहने के बाद मैंने सोचा था, कदाचित् कुन्दन गम्भीरतापूर्वक विमला के विषय में कुछ कहेगा, किन्तु उसके विपरीत वह अपनी बड़ी-बड़ी आंखें और कूल्हे मटकाते हुए बोला-'यार देखने में सुभावनी, बात करने में सुहावनी और कुल मिला कर मनभावनी.'

मुझे लगा जैसे कुन्दन विमला के नाम पर कविता करने पर उतर आया है.

'तो विमला से कब मिला रहे हो ?' मुझे याद है यह पूछते हुए मेरे मन में झिझक सी हुई थी. सोचने लगा-क्या कुन्दन की प्रत्येक प्रेमिका से मेरा परिचय होना जरूरी है ? पहले भी वह मुझे अपनी दो तीन

प्रेमिकाओं से मिला चुका था मुझे उनमें से किसी में ऐसा कुछ नजर नहीं आया कि कुन्दन के सदृश उनका मात्र मनोरंजन के अतिरिक्त अन्य कोई महत्व हो

'हां, हां ! क्यों नहीं. आज शाम को ही घर आओ विमला भी घर आयेगी '–उसने बड़ी सरलता से कहा.

'क्यो ? क्या पहले से ही कोई कार्यक्रम है ?'

'नहीं, विमला तो पडोस में ही रहती है उसे तो कभी भी बुलाया जा सकता है वैसे आज वह आयेगी '

जब तक हम कैन्टीन से बाहर आए उसने एक बार फिर अपने घर आने का आग्रह किया.

शाम तक कुन्दन और उसकी प्रेमिका के विषय में मैंने नहीं सोचा क्योंकि प्रेम करना उसके लिए निहायत साधारण बात थी और कभी उसने इन बातों को गम्भीरतापूर्वक लेने की चेष्टा नहीं की थी यह सब कुछ उसकी आम आदतों में शुमार था

विमला से भेंट करने के बाद मुझे उसके विषय में सोचना पड़ा उसका चेहरा आकर्षक और सौम्य था आंखें सजीदा. देखने में सुन्दर और चुस्त बातचीत के दौरान कई कई बार वह कुन्दन को एक खास समर्पण के भाव से एकटक निहारती रही जैसे उसके सम्पूर्ण चिन्तन का केन्द्र हो वह

कुन्दन मुझे तब भी निरा उथला हुआ लगा उसने विमला की बहुत सी बातों को बड़े मजाकिया ढंग से उड़ा दिया विमला खामोश रही किन्तु उसके अन्तर की पीड़ा के भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट रूप से पढ़े जा सकते थे और तभी मुझे विमला के पत्र की वे पंक्तियां

स्मरण हो आईं जिनमे उसने कुन्दन को लिखा था-'जाने तुम आज-कल उखड़े-उखड़े क्यों रहते हो, क्या खाते हो?. कब खाते हो? कैसे तुम्हारा दिन कटता है? काश।. मैं तुम्हारे साथ रह कर तुम्हारे प्रत्येक कार्य को व्यवस्थित कर पाती।'

मुझे लगा जैसे विमला कुन्दन से शादी करने की इच्छुक है किन्तु दोनो मे से किसी एक मे भी ऐसा कोई कदम उठाने का साहस नही. जात-पात की रूढियां तोड़ कर विवाह कर लेने की क्षमता नही.

फिर कई दिनो तक कुन्दन से इस विषय पर बात नही हो पाई. कुन्दन का प्यार पूर्ववत चलता रहा. फिर एक दिन विशेष घटना घटी. कुन्दन का दूसरे शहर मे स्थानान्तरण हो गया. मुझे एक विनोदी साथी से बिछुड़ जाने का गम और अफसोस हुआ. जाने से पूर्व उससे मैं मिला था. विमला के विषय मे भी उससे बातचीत हुई थी किन्तु उसके चेहरे पर बिछोह अथवा विषाद की एक रेखा भी नही देखी. उसे विमला से बिछुड़ने का जरा भी गम नही था. अन्य दिनो की अपेक्षा उसने विमला के विषय मे अधिक दिलचस्पी से कुछ नही बताया.

जिस दिन कुन्दन को शहर छोड़ना था उस दिन मै अन्य कार्यों मे बहुत व्यस्त रहा और जब स्टेशन मे उसे 'सी ऑफ' करने पहुँचा तो गाड़ी रवाना होने को थी. मैंने कुन्दन से हाथ मिलाया. वह प्रसन्न था. गाड़ी ने गति पकड़ी कुन्दन एक नए शहर मे जा रहा था. नए लोगो के बीच, नया जीवन जीने मुझे लगा जैसे वहा भी कोई नई प्रेमिका, कोई विमला उसकी प्रतीक्षा मे खड़ी है उसका इंतजार कर रही है ·

●

एक जिज्ञासा : चार स्थितियां

ोई चाहे कुछ भी कहे किरण को नितिन से लगाव केवल इसलिए है
र वह अच्छी सितार बजाता है कितना मिठास, कितना जादू है
सकी सितार की हर झंकार में

बल्डिंग की पहली मंजिल में दायीं ओर का पहला कमरा नितिन के
ास है वह कुछ माह पूर्व यहां आया है किरण के घर में उनके

उनने दिन भर घूम कर अपनी नई सहेलियों को बुला भेजा रात पड़ी तो बिस्तर पर पड़े पड़े उनके स्वागत-आवभगत के बारे मे सोचती रही. मुग्धा चाय नही पीती, कम्मो को दहीबड़े पसन्द नही, शकुन्त को गुलाब जामुन स नफरत है अगर फल रखे तो उसके मर की खैर नही बिनती बात बाद म करेगी पहले फल उसके सर पर द मारेगी फिर वह क्या रखेगी ? कुछ भी रख लेगी पर किसी ने पूछ लिया कि नितिन स उसका क्या सम्बन्ध है तो ? तो वह कह देगी—उसे उसकी सितार से प्यार है सितार से प्यार? ऊहु ! पगली. कौन मानेगा ? मान न मान, उसे क्या! नितिन की सितार सुनने की उत्कठा उस है तो क्या हुआ लोग अपने 'फेवरेट आर्टिस्टस' के लिए क्या कुछ नही करते इन्ही विचारो मे खोई वह देर तक जागती रही आख लगी तो काफी रात बीत गई थी

नीद खुली तो घडी साढे सात बजा रही थी वह हडबडा कर उठी घडी को करीब से देखा. माताजी की घडी से मिलाया ठीक है साढे सात ही बजे है तो इसका मतलब यह हुआ कि नितिन के प्रोग्राम की एक 'सिटिंग' हो चुकी उसने फिर अखबार देखा- 'सिटिंग' छ बज कर बीस मिनिट पर थी माता जी से झगडा किया कि उन्होन उसे जल्दी क्यो नही उठाया ? घर के नौकर बदलू पर भल्लाई कि वह उसका कमरा साफ करने सुबह जल्दी क्या नही आया ?

दूसरी 'सिटिंग' डेढ़ बजे थी. वह दस बजे ही तैयार हो रेडियो के पास आकर बैठ गई दैनिक, मासिक, सभी तरह के अखबारो को कई कई बार उलट पलट डाला अब तक दो घटे बाकी थे, समय काटने को उसने कुछ पृष्ठ और पढ़े

अब पचास मिनट गए थे

वह 'ड्राइंग रूम' में आकर गुलदस्ता ठीक करने लगी

अब दस मिनट अब पांच मिनट और

और तभी आंगन में धम्म से गिरने की आवाज के साथ किसी का चीखना उसे झकझोर गया वह उठ कर दरवाजे की ओर दौडी. उसने देखा आंगन में मिश्राजी की छोटी बच्ची खिडकी से गिर जाने के कारण चीख रही है उसका सर फट जाने से खून बह रहा है किरण ने दौड कर उसे गोद में उठा लिया तब तक इधर उधर से सब लोग आ गये उसे कमरे में पहुंचाया गया रेशम जला कर जख्म पर लगाया खून रुक गया

किरण अपने कमरे में आई तो नितिन की दस मिनट की दूसरी 'सिटिंग' भी समाप्त हो चुकी थी उसे बहुत दुःख हुआ वह जैसे हताश हो गयी वह शाम के सवा छः बजने की प्रतीक्षा करने लगी तब नितिन की बीस मिनट की तीसरी सिटिंग थी

शाम को छः बजे ही किरण ने रेडियो खोला रेडियो बज उठा और एकाएक उसका बल्ब बुझ गया आवाज बन्द हो गई उसने देखा, ठीक लगा था स्विच दबाया बत्ती नहीं जली मेन स्विच देखा अपने ठीक स्थान पर था फ्यूज बाक्स खोला 'फ्यूज' उडा नहीं था तो बिजली ही फेल हो गई। पडोस में पूछा तो। बिजली फेल हो गई

अब क्या होगा ? वह सर पर हाथ रख कर बैठ गई

लगभग साढ़े सात बजे बिजली आई नितिन का तीसरा प्रोग्राम भी वह नहीं सुन सकी. किरण की आशा खत्म होती थी

ग्राठ बज कर चालीस मिनट पर नितिन के ग्राज के प्रोग्राम की ग्राखिरी 'सिटिंग' थी. जैसे-जैसे समय बीतता जाता था उसकी उकताहट प्रबल होती जा रही थी

ग्राठ बज गए.

उसे ध्यान ग्राया कि सुधा, शकुन्त, बिनती ग्रब तक कोई नही ग्राया. उन्होने सात बजे तक ग्रा जाने का वायदा किया था फिर भी. वह कल कॉलेज मे सबको डाटेगी. किस तरह खुश होकर कहा था 'बडा मजा रहेगा.'

ग्राठ बज कर तीस मिनट

क्या कम्बख्त सबकी सब सो गईं ? वह भी ग्रब किसी के घर नही जायेगी. सबको कितने मन से बुलाया था.

ग्राठ बज कर चालीस मिनट हुए.

रेडियो से उसने सुना–'हम ग्राकाशवाणी के स्थानीय केन्द्र से बोल रहे है. रात्रि के ग्राठ बज कर चालीस मिनट हुग्रा चाहते है ग्रब हम ग्रापको बीस मिनट के लिए 'रेडियो न्यूज रील' सुनवायेंगे जिसे ग्राकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से 'रिले' किया जावेगा. हमे खेद है कि छपे हुए कार्यक्रम के ग्रनुसार इस समय नितिन शर्मा के सितार का कार्यक्रम नही सुनवा सकेंगे.'

किरण जैसे मग्न हो गई उसे लगा जैसे किसी ने उसकी ग्राशाग्रो पर पानी फेर दिया हो, उसका कुछ छीन लिया गया हो रेडियो बन्द करके वह ग्रशक्त सी ग्रपने कमरे मे ग्राकर लेट गई

अनुरोध के दाग

मनमोहन कार्यालय से तो समय पर बाहर आ गया किन्तु घर नहीं गया. दरवाजे पर पहुँचा कि प्रतिदिन की भांति दिनेश ने पूछा-

'लाइब्रेरी चलोगे ?'

'हां, चलो !' मनमोहन ने आज पहली बार दिनेश के इस आग्रह को स्वीकारा था. उसकी लाइब्रेरी जाने में विशेष रुचि कभी नहीं रही. इसी कारण उसके कार्यालय का अध्ययनशील मित्र दिनेश नित्य उसे व्यंग्यपूर्ण ढंग से लाइब्रेरी चलने का आग्रह करता है. मनमोहन

मे पहली बार 'हां' सुना तो अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका. दूसरी बार फिर पूछा-'मैं तुम्हे लाइब्रेरी चलने के लिए पूछ रहा हूं.'

'जी हां. मैंने सुन लिया है. अपनी साइकिल उठाओ और चलो।' मनमोहन इतना कह साइकिल पर चढ़ने का उपक्रम करने लगा.

दिनेश ने देखा मनमोहन की भंगिमा आज कुछ अधिक गम्भीर है. उसके चेहरे पर दुख की धुंधली सी रेखाएं उभरती जा रही है. उसे लगा जैसे वह किसी खास विचार में डूबा हुआ है.

दोनों ऑफिस से निकल कर मुख्य सड़क पर आ गए थे. खामोशी को तोड़ते हुए दिनेश ने पूछा-'क्या बात है मनमोहन? आज कुछ अधिक परेशान नजर आ रहे हो?'

'नहीं तो, ऐसी कोई बात नहीं.' मनमोहन ने अपने चेहरे के भाव छिपाते हुए कहा और एक रूखी सी मुस्कुराहट बिखेर दी.

पर दोनों के बीच खामोशी का पर्दा नहीं हटा. मनमोहन फिर विचारों में खो गया. आज उसे रह-रह कर अपने घर और परिवार की स्थिति का खयाल सालता रहा था. बार-बार उसके कानों में अपनी पत्नी विमला के प्रश्न गूंज रहे थे जिनका उत्तर आज फिर वह घर पहुँचते ही उससे पूछेगी. आज सुबह भी परेशान होकर विमला ने कहा था-'लल्ली के स्कूल की फीस का प्रबन्ध अब तक नहीं हो पाया है. कुन्दन कब से ट्राइसिकिल के लिए मचल रहा है. बिल्लू की सर्दियां क्या गर्म कोट के बिना ही गुजरेंगी?' उसे याद है, इन प्रश्नों में से किसी का भी उत्तर वह ठीक तरह से नहीं दे पाया था. तब से उसके मन में निराशा के अजीब से भाव पल रहे हैं.

दिनेश के साथ लाइब्रेरी चलते समय उसने सोचा था कि वह इन सभी चिंताओं से कुछ समय के लिए मुक्त रह सकेगा. किन्तु घर में

अनुरोध के दाग

मनमोहन कार्यालय से ठीक समय पर बाहर आ गया किन्तु घर नहीं गया। दरवाजे पर पहुँचा कि प्रतिदिन की भाँति दिनेश ने पूछा—'लाइब्रेरी चलोगे?'

'हाँ चलो!' मनमोहन ने आज पहली बार दिनेश के इस आग्रह को स्वीकारा था। उसको लाइब्रेरी जाने में किंचित रुचि कभी नहीं रही। इसी कारण उसके कार्यालय का प्रधानाध्यापक मित्र दिनेश नित्य उन व्यंग्यपूर्ण ढंग से लाइब्रेरी चलने का आग्रह करता है। मनमोहन

वह जितना दूर जा रहा था उसके विचार उसे घर के और अधिक समीप ला रहे थे.

वह अपने बच्चों और पत्नी के विषय में सोच रहा था. उनके घर तो तीन ही सन्तानें हैं लोगों के घर तो पाँच और छ-छ, सात-सात सन्तानें होती हैं. फिर भी पति और पत्नी के मध्य पर्याप्त प्रेम और आकर्षण बना रहता है. प्यार का वातावरण बना रहता है फिर विमला को जाने क्या हो गया है! उसकी कोई खास उम्र भी नहीं आज से छः साल पहले जब वह दुल्हन बन कर आई थी तो क्षण भर भी उससे बिछुड़ने को जी नहीं करता था किन्तु अब तो उसके चेहरे से वे सभी भाव जैसे हवा में उड़ गए हों. लगता ही नहीं कि कभी वह उसकी प्रेयसी, उसकी प्रेरणा रही हो ब्याह के बाद बच्चे होना तो स्वाभाविक है किन्तु पति पत्नी के बीच प्यार का वातावरण न रहे. इसका तो कोई कारण नजर नहीं आता आखिर विमला के स्वभाव में यह अनमनापन क्यों आ गया है? क्या?

यही सोचता हुआ वह सड़क पर एक तांगे से टकराता पर दिनेश ने पकड़ कर बचा लिया उसे ख्याल ही नहीं रहा कि वे लाइब्रेरी पहुँच गए हैं

लाइब्रेरी पहुँच कर भी वह किसी पुस्तक अथवा पत्रिका को नहीं पढ़ सका वहीं अपना ध्यान केन्द्रित करके मस्तिष्क में उठ रहे विचारों पर काबू नहीं पा सका कुछ क्षण भी ऐसी स्थिति में नहीं आ सका कि टेबल पर पड़ी पत्र-पत्रिकाओं को ध्यान से उलट-पलट कर देख लेता

लाइब्रेरी में भी मनमोहन अधिक नहीं रुका और दिनेश को सूचना दिए बिना ही पब्लिक पार्क की ओर चल दिया शाम हो चली थी.

रात का अंधेरा भी कदम बढाए चला आ रहा था पार्क मे भी सब लोग उसे अजीब और अनजाने लगे एक क्षण मस्तिष्क मे किसी मित्र के यहा चले जाने का ख्याल आया पर दूसरे ही क्षण उसे त्याग भी दिया

घर पहुँचा तो उसने बेहद थकान का अनुभव किया मानसिक और शारीरिक दोनो थकानें. बरामदे मे जूते खोलने के बहाने देर तक खडा रहा. घर मे लगभग सन्नाटा था कोई बच्चा उससे लिपटने बाहर बरामदे तक नही आया. मनमोहन ने इसकी जरूरत भी महसूस नही की.

धीरे-धीरे कदम उठाता हुआ अन्दर के कमरे मे पहुँच गया. सामने देखा तो कुछ समझ नही पाया. खाट पर बिल्लू कम्बल ओढे सो रहा था. विमला, कुन्दन और लल्ली उसके पास बैठे थे मनमोहन ने कोट उतारा और पास पडी कुर्सी पर बैठ गया. विमला से पूछा-'क्या हुआ इसे ?'

विमला ने कोई उत्तर नहा दिया एक निराश नजर से देखा भर और बिल्लू का कम्बल ठीक करने लगी.

तभी लल्ली, जिसने अपने पिता के प्रश्न को ठीक तरह से सुना था, बोली-'बाबूजी ! बिल्लू को दोपहर मे बुखार आ रहा है. मा तभी से इसके पास बैठी है. खाना भी अब तक नही खाया

'अच्छा, क्या दवाई दी है इसे ?'

'जो,' विमला ने रूखा सा अधूरा उत्तर दे दिया.

'लेकिन घर मे तो सब्जी लाने को भी पैसे नहीं थे फिर किसी पडोसी से लिए क्या ?'

'नहीं तो.' विमला ने उसी मुस्त भाव से कहा और बिल्लू की नब्ज देखने लगी.

मनमोहन ने आगे कुछ नहीं पूछा. वह समझ गया कि विमला ने उन रुपयों में से खर्च कर दिया है जो उसके पिताजी ने उस दिन मात्र ९ लिए भेजे थे. उसने उठ कर बिल्लू के बदन पर हाथ रखा शरीर बुखार से तप रहा था यह कुछ मनमना सा हो रहा

उसने देखा विमला के चेहरे पर चोटा व अजीब से भाव तिर आए हैं उसके बाल बिखरे हुए हैं और कपड़े भी ठीक तरह से नहीं पहन रखे हैं जैसे वह बहुत थक गई है

कुछ देर वातावरण में चुप्पी छाई रही विमला उठ कर खाना पकाने चली गई जब सब खाना खा चुके तो बर्तन चौका करके फिर बिल्लू के पास आकर बैठ गई. उसी निराश भाव से मुन्ने की बिल्लू की ओर नजर गड़ाए.

रात को मनमोहन की नींद खुली तो उसने विमला को जागता पाया स्वयं जागने को कह कर उसे आराम करने के लिए भेज दिया

सुबह बिल्लू का बुखार कम हो गया था विमला की चिंता भी कुछ कम हुई रोज की तरह वह घर के विविध कामों में जुट गई मनमोहन दैनिक कार्यों से निवृत्त हुआ तो कार्यालय का समय हो गया विमला नहाने का पानी ले आई उसे विमला के हाथों का पकाया भोजन आरम्भ से ही रुचिकर लगता है आज तो वह जैसे उठना ही नहीं चाहता था प्रत्येक व्यंजन अत्यन्त स्वादिष्ट बना था. उसे कभी भी भोजन के सम्बन्ध में विमला से कोई शिकायत नहीं रही.

कार्यालय जाने का हुआ तो विमला उसे द्वार तक छोड़ने आई.

मनमोहन ने उसकी ओर गौर से देखा और सोचने लगा, विमला के इस पार्थिव चित्र में कौनसा रंग बेहतर है ? पत्नी का या मां का ? वह देर तक उसकी ओर आत्म-विभोर सा निहारता रहा सोचता रहा फिर उसे लगा जैसे वे दोनों रंग आपस में काफी घुल मिल गए हैं और उनमें सेवा और कर्त्तव्य के मिले-जुले भाव का एक नया रंग उभरा है नया प्रभाव पैदा हुआ है और उसका मन एक पुलक से भर गया.

विमला बिन्नू के लिए दूध लेकर कमरे की ओर जाने लगी तो उसका पल्लू अचानक दरवाजे में अटक कर जोर से खिंच गया उसके रोम रोम में एक अजीब सरसराहट दौड़ गई उसे याद आया अभी कुछ दिन पूर्व ही इसी तरह उसका पल्लू खींच कर मनमोहन उसे अपनी बाहों में कस लिया करता था. वह देर तक मंत्र-मुग्ध सी खड़ी रही. उसकी स्मृति में मनमोहन का वह चित्र बार-बार उभरता रहा उसकी शरारतें, उसका हंसना हंसाना जैसे वह अपनी आंखों के सामने देखती रही आज उसके मन में अजीब सी हलचल मच गई प्यार का सागर उमड़ पड़ा. उसे ध्यान ही नहीं रहा कि कब उसने अपने बाल संवार लिए. स्वयं शीशे के सामने खड़ी थी किन्तु अपने सामने बराबर उसने मनमोहन को ही देखा आज उसने मनमोहन की पसन्द की साड़ी पहनी जिसे वह उसके लिए पिछले दिनों खास तौर से लाया था किन्तु उसने बिना देखे ही ट्रंक में रख दिया था.

मनमोहन कार्यालय से आया तो उसने विमला को अपनी बाट जोहते पाया. आज वह उसे अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक आकर्षक दिख रही थी. उसने बहुत दिनों के बाद आज उसके चेहरे पर मुस्कुराहट की रेखा देखी, आंखों में शोखी और चंचलता के भाव देखे. उसने

'रहने दो.' विमला ने उसी सहज भाव से कहा और बिल्लू की नब्ज देखने लगी.

मनमोहन ने आगे कुछ नहीं पूछा. वह समझ गया कि विमला ने उन रुपयों में से खर्च कर दिया है जो उसके पिताजी ने उस दिन [illegible] भेजे थे. उसने उठकर बिल्लू के मस्तक पर हाथ रखा. शरीर बुखार से तप रहा था. वह कुछ परेशान सा हो रहा. उसने देखा विमला के चेहरे पर शोक व अवसाद के भाव फिर आए हैं. उसके बाल बिखरे हुए हैं और कपड़े भी ठीक तरह से नहीं पहन रखे हैं. जैसे वह बहुत थक गई है.

कुछ देर वातावरण में चुप्पी छाई रही. विमला उठकर खाना पकाने चली गई. जब सब खाना खा चुके तो बर्तन चौका करके फिर बिल्लू के पास आकर बैठ गई. उसी निराश भाव से सूना सा बिल्लू की ओर नजर गड़ाए.

रात को मनमोहन की नींद खुली तो उसने विमला को जागता पाया. स्वयं जागने को कह कर उसे आराम करने के लिए भेज दिया.

सुबह बिल्लू का बुखार कम हो गया था. विमला की चिंता भी कुछ कम हुई. रोज की तरह वह घर के विविध कामों में जुट गई. मनमोहन दैनिक कार्यों से निवृत्त हुआ तो कार्यालय का समय हो गया. विमला नहाने का पानी ले आई. उसे विमला के हाथों का पकाया भोजन आरम्भ से ही रुचिकर लगता है. आज तो वह जैसे उठना ही नहीं चाहता था. प्रत्येक व्यंजन अत्यन्त स्वादिष्ट बना था. उसे कभी भी भोजन के सम्बन्ध में विमला से कोई शिकायत नहीं रही. कार्यालय जाने का हुआ तो विमला उसे द्वार तक छोड़ने आई.

मनमोहन ने उसकी ओर गौर से देखा और सोचने लगा, विमला के इस पार्थिव चित्र में कौनसा रंग बेहतर है ? पत्नी का या मां का ? वह देर तक उसकी ओर आत्म-विभोर सा निहारता रहा. सोचता रहा फिर उसे लगा जैसे वे दोनों रंग आपस में काफी घुल मिल गए हैं और उनमें सेवा और कर्त्तव्य के मिले-जुले भाव का एक नया रंग उभरा है. नया प्रभाव पैदा हुआ है और उसका मन एक पुलक से भर गया

विमला बिल्लू के लिए दूध लेकर कमरे की ओर जाने लगी तो उसका पल्लू अचानक दरवाजे में अटक कर जोर से खिंच गया. उसके रोम रोम में एक अजीब सरसराहट दौड़ गई उसे याद आया अभी कुछ दिन पूर्व ही इसी तरह उसका पल्लू खींच कर मनमोहन उसे अपनी बाहों में कस लिया करता था. वह देर तक मन्त्र-मुग्ध सी खड़ी रही. उसकी स्मृति में मनमोहन का वह चित्र बार-बार उभरता रहा उसकी शरारतें, उसका हंसना हंसाना जैसे वह अपनी आंखों के सामने देखती रही आज उसके मन में अजीब सी हलचल मच गई प्यार का सागर उमड़ पड़ा उसे ध्यान ही नहीं रहा कि कब उसने अपने बाल सवार लिए. स्वयं शीशे के सामने खड़ी थी किन्तु अपने सामने बराबर उसने मनमोहन को ही देखा. आज उसने मनमोहन की पसन्द की साड़ी पहनी जिसे वह उसके लिए पिछले दिनों खास तौर से लाया था किन्तु उसने बिना देखे ही ट्रंक में रख दिया था

मनमोहन कार्यालय से आया तो उसने विमला को अपनी बाट जोहते पाया. आज वह उसे अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक आकर्षक दिख रही थी उसने बहुत दिनों के बाद आज उसके चेहरे पर मुस्कुराहट की रेख देखी, आंखों में शोखी और चपलता के भाव देखे. उसने

अनुभव किया जैसे उसकी शारीरिक और मानसिक दोनों थकानें मिट रही हैं, मिट रही हैं और

दूसरे दिन विमला ने मनमोहन के साथ काफी रुचि के साथ बातचीत की. बड़े मन से उसे खिलाया-पिलाया और कार्यालय जाने के लिए द्वार तक छोड़ने आई और कहा—'सुनिये, विल्लू की तबीयत अब ठीक है इस बार मैं पिताजी के यहां नहीं जाना चाहती. आप कहें तो हम लोग आज शाम को घूमने चलें. कैकी कई दिनों से सिनेमा देखने के लिए भी कह रही है'

मनमोहन उत्तर में केवल 'हां' कह कर मुस्कुरा दिया कार्यालय में पहुँचा तो मन की प्रसन्नता चेहरे पर उभर आई. सभी से हंसी-खुशी के साथ बातचीत की. कार्यालय में आज सात घंटे उसे बहुत बड़े लगे. टेबल से उठ कर समय काटने के लिए दो-तीन बार कैन्टीन भी हो आया

समय हुआ तो सदा की भांति दिनेश ने पूछा—'लाइब्रेरी चलोगे ?'

'नहीं, मुझे समय पर घर पहुँचना है' इतना कहा और मनमोहन साइकिल पर बैठ गया

दिनेश को लगा जैसे मनमोहन के चेहरे पर से निराशा और चिन्ता के सभी भाव काफूर हो गए हैं. उसकी मानसिक कुंठाओं का शमन हो गया है. उसकी सभी थकानें जैसे तोष की राह पा गई हैं वह देखता रहा, मनमोहन के तेजी से चलते हुए पैर और उनसे खिंचते हुए साइकिल के पहिए

विकल्पहीन स्थितियां

'सुनो जेके.' उसने व्हिस्की की बोतल को एक ओर रखते हुए कहा-'जीवन क्या है ? क्यों है ? इन प्रश्नों पर मैंने कभी कोई विचार नहीं किया मैं जानता हूं इन बातों का हल हम कभी ढूंढ नहीं पायेंगे. जिन्दगी शराब का एक जाम है जिसके खत्म होने के साथ साथ सब कुछ खत्म हो जाता है.'-उसने अपनी जेब में सिगरेट का पैकिट निकाल कर जेके के हवाले किया

जेके अब उबासियां ले रहा था सिगरेट सुलगा कर उसने धुएं के कई गुब्बार छोड़े और बोला-'मैं तुमसे बिल्कुल असहमत हूं, दोस्त ! मैं सिर्फ तुम्हारी बात नहीं कह रहा था. मैंने अपने, तुम्हारे, उसके और हम सबके बारे में कहा था. हमारे पास जो कुछ है, हम उससे सन्तुष्ट नहीं हैं और इसका या उसका कोई विकल्प भी हमारे सामने नहीं है.' जेके सिगरेट समाप्त कर चुका था और गिलास में शेष व्हिस्की के रस को ताकता हुआ सिप लेने में मशगूल हो गया.

उसने ऐसा भाव जताया जैसे जेके का कथन उसके लिए कोई विशेष अर्थ नहीं रखता हो. वह बोला-'तुम समझते हो हमारा नित्य प्रति आफिस में पड़ा काम मिलता. फाइलें ढूंढता, मन ही मन कसमसाता और सहयोगियों को कोसता और फिर शाम होते ही मित्र पर मजबूर

पर बठा हुआ लगा जब न आगे कुछ नहा वहा अपना गिलास म रम के ढाल जान का विरोध भी नही किया धीरे धीरे पिन लगा

हा ता म यह रहा था हम प्राप्त या वतमान स सतुष्ट नहा हैं भविष्य का काइ बात हमार बस म नही है इसलिए हमारे अन्दर उसके प्रति आक्रोश है तुम्हार मेरे या शुचि के लिए या फिर हम सबके लिए इसक अतिरिक्त और काइ चारा नहा कि हम स्वय को स्थितिया के हवाल कर द जेके न कहा

यह ता पलायन हुआ हमारे अन्दर पल रहे अह और आत्मबल को भुलाना हुआ तुम स्थिति स हट पान का एक ही विकल्प मानत हो वह यह कि जो कुछ हम प्राप्य है मिल रहा है उसे छोड द जो कुछ ह वह नही रहे और जो कुछ हमे नहा होना चाहिए वह हो जायें उसन रम का लम्बा घूट लिया

एक्जक्टली ! ठीक यही मेरा मन्तव्य है म नित्य अपन गिर्द बठन वाले चापलूस क्लकों का कोसता हूँ तुम दफ्तर की ऊब शराब से मिटाते हो शुचि जिन्दगी की कुढन टाइप राइटर से करती है विकास का पाइटिक टलट प्रूफ रीडरी स घिस रहा है यह सब क्या ह ? स्थितियो से समझौता मात्र ! दूसरे शब्दो म यही वे विकल्पहीन स्थितिया ह जिनम हम सब जी रहे हैं

जके का लगा जस वह असतुलित हो रहा है उसन दो एक बार सिगरेट सिलगान के लिए दियासलाई जलाई किन्तु दानो बार वह असफल रहा जेक न उसकी ओर देखा वह मुस्कुरा भर दिया जब उस पर निगाह रखते हुए सोफ पर फल गया